ज्ञानामृत

वर्ष 50, अंक 4, अक्टूबर, 2014 (मासिक),
मूल्य 8.50 रुपये, वार्षिक शुल्क 100 रुपये

1

2

1.शान्तिवन (आबू पर्वत)- क्लीनिकल, प्रीवेन्टिव कारडियोलोजी एंड इमेजिंग विषयक 9वीं वर्ल्ड कांग्रेस का उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी, मध्यप्रदेश के राज्यपाल महामहिम भाता रामनरेश यादव, डॉ.सतीश गुप्ता, डॉ. दीपक चोपड़ा, डॉ.बनारसी भाई, ब्र.कु.मुन्नी बहन, ब्र.कु.अवधेश बहन तथा अन्य। **2.शान्तिवन (आबू पर्वत)-** मीडिया प्रभाग द्वारा आयोजित मीडिया महासम्मेलन का उद्घाटन करते हुए केन्द्रीय पर्यटन एवं संस्कृति राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) भाता श्रीपद नायक, राजयोगिनी दादी रत्नमोहिनी, ब्र.कु.ओमप्रकाश भाई, ब्र.कु.शीलू बहन तथा अन्य।

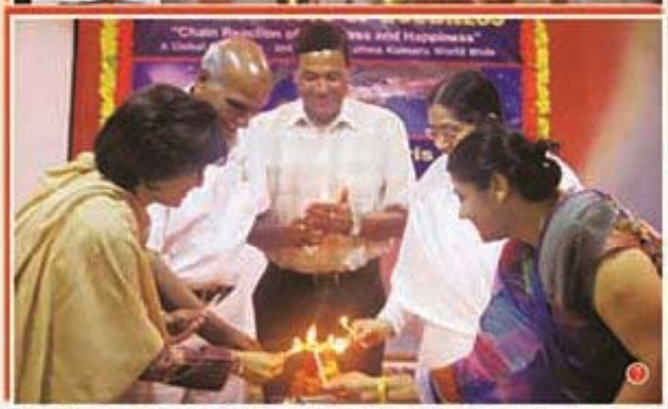

1.**दिल्ली-** 'महापरिवर्तन के लिए ईश्वरीय शक्ति' विषयक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए भाजपा के वरिष्ठ नेता भ्राता एल.के.आडवानी, ब्र.कु.बृजमोहन भाई, केन्द्रीय महिला एवं बाल विकास मंत्री बहन मेनका गांधी, राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी तथा अन्य। 2.**काठमाण्डू-** नेपाल के राष्ट्रपति महामहिम डॉ.रामबरण यादव को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.मृत्युंजय भाई। साथ में हैं ब्र.कु.राज बहन। 3.**गांधीनगर-** गुजरात के राज्यपाल महामहिम भ्राता ओमप्रकाश कोहली को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.सरला बहन। 4.**ज्ञान सरोवर (आबू पर्वत)-** 'सफलता की तलाश में युवा' विषयक युवा प्रभाग के कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु.मोहन सिंघल, ब्र.कु.डॉ.निर्मला बहन, लीड इंडिया फाउंडेशन 2020 के संस्थापक अध्यक्ष प्रो.सुदर्शन आचार्य, ब्र.कु.चंद्रिका बहन, ब्र.कु.आत्मप्रकाश भाई तथा अन्य। 5.**जयपुर-** 'नये भारत का निर्माण गीता ज्ञान द्वारा' विषयक कार्यक्रम के उद्घाटन के पश्चात् ईश्वरीय स्मृति में हैं ब्र.कु.सुषमा बहन, ब्र.कु.आशा बहन, आचार्य नर्मदा शंकर, ब्र.कु.बृजमोहन भाई तथा अन्य। 6.**चण्डीगढ़-** 'गीता के भगवान द्वारा स्वर्णिम संसार की पुनर्स्थापना' विषयक कार्यक्रम में मंचासीन हैं ब्र.कु.बृजमोहन भाई, ब्र.कु.अचल बहन, न्यायमूर्ति भ्राता ईश्वरैय्या, हरिद्वार के संतगण तथा ब्र.कु.पुष्पा पांडे। 7.**कोलकाता-** 'सात अरब सत्कर्मों की महायोजना' का उद्घाटन करते हुए धरसेरो इनवेस्टमेंट्स लि.की निदेशिका बहन अरुणा थानुका, ब्र.कु.रामप्रकाश भाई, ब्र.कु.कानन बहन तथा अन्य। 8.**तिरूपति-** 'सात अरब सत्कर्मों की महायोजना' का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु.लीला बहन, विधायक भ्राता वेंकटरमन, पदमावती विश्वविद्यालय की कुलपति बहन रत्नाकुमारी तथा अन्य।

संजय की कलम से ..

क्षमा-दान

क्षमा माँगने की तरह ही महत्वपूर्ण आदत है – दूसरों को क्षमा देना। हम दूसरों की भूल को यदि मानस पटल पर पत्थर की लकीर की तरह अंकित कर लेते हैं और उसे मन से मिटाने अर्थात् भूलने का नाम ही नहीं लेते तो अपना ही मन बोझिल अथवा छिद्र-छिद्र कर लेते हैं। भूलों को मन में इकट्ठा करना – यह कैसा शौक है! सुलगती हुई राख या सड़ते हुए कचड़े को मन में भर देना तो गोया अपनी ही बुद्धि का दिवालियापन है। दूसरे की भूल का अपने मन को शूल अथवा आँख का बबूल बना लेना तो अपने लिये स्वयं सूली तैयार करना अथवा काँटों की शैय्या तैयार करना है। फिर, यदि हम दूसरों की भूलों के लिए उन्हें क्षमा नहीं करते तो भगवान से अपने पापों और अपराधों की भी थोड़ी भी क्षमा की आशा करने के भी योग्य कैसे बन सकते हैं?

अत: हम मन को विशाल अथवा विराट करें और क्षमा करें। यह कलियुग का अन्तिम चरण है, भूल तो प्राय: सभी करते हैं। खराब आदतें भी थोड़ी-बहुत सभी में हैं। इसलिए क्षमा करो। अब अपने जीवन में क्षमा का अध्याय खोलो। और कुछ दान नहीं करते तो क्षमा दान ही कर दो। क्षमा न करने से व्यक्ति स्वयं ही 'कूड़ेदान' या 'नादान' (बेसमझ) बन जाता है। दयालु प्रभु के दयालु बच्चे बनो!

'क्षमा' का अर्थ यह नहीं है कि धोखेबाज़, मक्कार, अत्याचारी, दुष्ट, निर्दयी व्यक्ति को ऐसा क्षमा कर दो कि वह आप को ही निगल जाये। दुष्ट को बार-बार दुष्टता करने की खुली छूट मत दो। क्षमा करने का यह भाव भी नहीं है कि आप तलवार उठा कर उसे यहाँ से सीधे धर्मराजपुरी में भेज दो जो कि अभी खुली ही नहीं। किसी ने कितनी बड़ी भूल की है और (ii) कितनी बार वह भूल दोहराई है और (iii) उस व्यक्ति का इरादा क्या है और (iv) वह स्वयं स्वभाव का कैसा है – यह सब देख कर उसे माफ करो वरना वह आपको ही साफ़ कर देगा या आप पर अपना हाथ साफ़ कर देगा। अन्य प्रकार के दान की तरह क्षमा-दान भी पात्र को करो और दूसरे को क्षमा देने पर कुछ सतर्क हो कर देखो कि वह क्षमा पा कर आक्रमण की तैयारी करता है या सुधरता है। मन से क्षमा कर दो परन्तु अपने बचाव का उचित प्रबन्ध कर लो। ❖

अमृत-सूची

- निर्विघ्न जीवन *(सम्पादकीय)*..... 4
- धन्यवाद बाबा 6
- आओ सच्ची दीवाली मनायें *(कविता)* 6
- 'पत्र' संपादक के नाम 7
- प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के..8
- ईश्वरीय कारोबार में 10
- सार्वभौमिक बंधुत्व का 13
- मानव जीवन रूपी 15
- दीवाली के पीछे छिपे हुए रहस्य 17
- जो हुआ अच्छा हुआ 20
- जब बाबा ने ड्राइवर की बुद्धि .21
- प्रभु से सर्व सम्बन्धों की 22
- सुलझ गई.. *(कविता)* 24
- पत्थर को हीरा बना दिया 25
- संपूर्ण समर्पण 26
- बुराई का त्याग.....27
- अवतरित खुदा *(कविता)* 27
- सचित्र सेवा समाचार 28
- वृद्ध अवस्था बेमिसाल 30
- सचित्र सेवा समाचार 32
- कैंसर की गांठ पिघल गई 34

सदस्यता शुल्क

	वार्षिक	आजीवन
भारत		
ज्ञानामृत	100 /-	2,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	100/-	2,000/-
विदेश		
ज्ञानामृत	1,000 /-	10,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	1,000/-	10,000/-

शुल्क केवल '**ज्ञानामृत**' अथवा '**द वर्ल्ड रिन्युअल**' के नाम से ड्राफ्ट या मनीऑर्डर द्वारा भेजने हेतु पता है- संपादक, ओमशान्ति प्रिंटिंग प्रेस, ज्ञानामृत भवन, **शान्तिवन- 307510 (आबू रोड) राजस्थान।**

शुल्क के लिए सम्पर्क करें -
09414006904, 09414423949
hindigyanamrit@gmail.com

निर्विघ्न जीवन

मानव जीवन विघ्नों को पार करते-करते ही बड़ा होता है। शारीरिक विकास में रोगों की, प्राकृतिक परिवर्तनों की अनेक परीक्षाएँ आईं पर हम आज हैं इसका अर्थ है कि हम उन परीक्षाओं में विजयी हुए।

विघ्न है हमारे किसी कर्म की प्रतिक्रिया

शारीरिक विकास की तरह आध्यात्मिक विकास में भी बाधाएँ आती हैं। पर हम यह अच्छी तरह जान लें कि हमें जो विघ्न लग रहा है वो और कुछ नहीं, मात्र हमारे किसी कर्म की प्रतिक्रिया है। मान लीजिए, एक व्यक्ति से हमने 50 हज़ार रुपये उधार लिए और कहा, एक मास बाद लौटा देंगे। महीने बाद जब वह पैसे मांगने आया तो हमसे पैसों का प्रबन्ध हो नहीं पाया था। उसने हमें याद दिलाया, आपने तो वायदा किया था कि एक मास बाद लौटा देंगे। हमें गुस्सा आ गया और गुस्से में ही उससे कह दिया, चले जाओ यहाँ से, मैं कोई भागा थोड़े जा रहा हूँ, चुका ही दूँगा। उसने कहा, मैं तो समय पर ही आया हूँ, समय से पहले तो नहीं आया, गुस्सा क्यों होते हो? उसकी बात सुन हमारा गुस्सा और बढ़ गया और हम हिंसा पर उतर आए। उसे चोटिल कर दिया। उसने हम पर मुकदमा दर्ज कर दिया। हमें सज़ा हुई जिसमें कहा गया, या तो 6 मास जेल में रहो या 50 हजार रुपये जुर्माना भरो।

अब देखिए, उधार लेने रूपी कर्म हमने किया। उसके फलस्वरूप दाता अपना पैसा लेने आया। हमें अपने ही कर्म के इस फल को स्वीकार करना चाहिए था परन्तु स्वीकार करने के बजाए, क्रोध और हिंसा का एक नया बीज और बो दिया। बीज से पुन: फल निकला। जैसे बीज कड़वा था, यह फल (जुर्माना, जेल) भी कड़वा है। अब हमारे सामने दो कड़वे फल हैं, एक तो उधार के 50 हजार रुपये लौटाने हैं और दूसरा, हर्जाने के 50 हजार रुपये लौटाने हैं।

यदि हम अब भी ना सम्भलें और इन दोनों का भुगतान ना करें, भुगतान करने में अनिच्छा ज़ाहिर करें, दूसरे का दोष निकालें या किसी भी रूप में गलत प्रतिक्रिया करें तो हो सकता है कोई तीसरा इनसे भी कड़वा फल सामने आ जाए। यदि हम सोचें कि संसार ही छोड़कर चले जाएँ तो भी संसार छूट जाएगा पर ये कर्म साथ ही जाएँगे और किसी भी रूप में अपना भुगतान चाहेंगे।

हमारे सामने व्यक्ति, प्रकृति, शरीर, सम्बन्ध आदि से जुड़ा जो भी विघ्न है वह वास्तव में हमारे अपने कर्म का फल है। हमारी ही क्रिया की प्रतिक्रिया है। हमारे बोए बीज का ही वटवृक्ष है। हम उसे स्वीकार करें और चुक्ता करें, इसी में हमारा कल्याण है। ना उसका सामना करें, ना उससे बचके भागें, ना उस पर दोषारोपण करें बल्कि उसका स्वागत करें और वो हमें किस तरह मोल्ड कर देना चाहता है हम मोल्ड हो जाएँ। विघ्नों से प्रभावित न होने पर वे सूली से कांटा बन जाते हैं। उनसे प्रभावित होते रहेंगे तो कांटे से सूली बन जाएंगे।

विघ्नकारी आत्मा है पाठ पढ़ाने वाली

विघ्न के प्रति हमारी सकारात्मक टिप्पणी उसके फोर्स को कम कर देती है। इसलिए बाबा ने एक मुरली में कहा, ''चाहे कोई गाली भी देता है तो बलिहारी गाली देने वाले की जो सहनशक्ति का पाठ पढ़ाया। बलिहारी तो हुई ना, जो मास्टर बन गया आपका।'' एक अन्य मुरली में बाबा ने कहा, ''जो आत्माएँ विघ्न डालने के निमित्त बनती हैं, उन्हें विघ्नकारी आत्मा नहीं देखो, उनको

सदा पाठ पढ़ाने वाली, आगे बढ़ाने वाली निमित्त आत्मा समझो। अनुभवी बनाने वाले शिक्षक समझो। जब कहते हो, निंदा करने वाले मित्र हैं तो विघ्नों को पास कराके अनुभवी बनाने वाले शिक्षक हुए इसलिए विघ्नकारी आत्मा को उस दृष्टि से देखने के बजाय सदा के लिए विघ्नों से पार कराने के निमित्त, अचल बनाने के निमित्त समझो। इससे और भी अनुभवों की अथॉरिटी बढ़ती जाएगी।''

कर्म का फल ही किस्मत है

जिस प्रकार रेडियो, टी.वी. की तरंगें हवा में हैं लेकिन वे पकड़ में तभी आती हैं जब हम उस फ्रिक्वैन्सी पर टी.वी. या रेडियो को सेट करते हैं। इसी प्रकार, हमारे विचार, बोल तथा कर्म की तरंगें हवा में मौजूद रहती हैं यानि वह ऊर्जा अपने लक्ष्य तक पहुँचती है और इस पहुँचने की क्रिया के बाद प्रतिक्रिया के रूप में हमारे पास वापस भी आती है। तब उस ऊर्जा को हम किस्मत का नाम देते हैं यानि करते समय जो कर्म है, लौटते समय वह ऊर्जा किस्मत बन जाती है। अपनी उस किस्मत के रचयिता हम खुद हैं। चूँकि विचार आत्मा में ही उत्पन्न होते हैं इस कारण आत्मा में ही भरे रहते हैं जो इसी जन्म में या अगले जन्म में हमारी किस्मत के रूप में सामने आते हैं।

हर परिस्थिति से सीखो और आगे बढ़ो

संसार में तीन तरह के लोग हैं, 1.विघ्नों (समस्याओं) को रचते हैं, 2. विघ्नों से घबराते हैं, 3.विघ्नों का नाश (समस्याओं का समाधान) करते हैं। हम अपने से पूछें, मैं कौन-सी श्रेणी में हूँ? सबसे उत्तम हैं विघ्न विनाशक, वे ही गणेश की तरह पिता परमात्मा के प्रिय पुत्र हैं। संसार बदलता है, समय बदलता है, इस परिवर्तनशील जगत में कुछ भी स्थाई नहीं है फिर क्लेशकारी परिस्थिति स्थाई कैसे हो सकती है? उसको भी बदलना ही है। न अनुकूल सदा है, न प्रतिकूल सदा इसलिए हर परिस्थिति से सीखो और आगे बढ़ो। प्रतिकूल परिस्थिति मनोबल बढ़ाती है और अनुकूल परिस्थिति पुण्य कर्म बढ़ाती है।

विघ्न आता है स्थितप्रज्ञ बनाने

कोई भी विघ्न वास्तव में हमें ईश्वर के अधिक करीब ले जाने आता है। हम अपनी ताकत से जब आगे नहीं बढ़ पाते तो विघ्न आकर हमारी ताकत बढ़ा देता है। इसलिए शिव बाबा कई बार कहते हैं, माया (विघ्न), विश्व परिवर्तन में मेरी सहयोगी है। जब देखता हूँ, किसी पुरुषार्थी की चाल रुक गई या उमंग फीका पड़ गया तो मैं माया को भेजता हूँ उसके पास। माया उसकी चाल को तीव्र कर देती है, कैसे? मुझे एक घटना का स्मरण हो आया। एक बार ठण्ड के मौसम में एक महिला अपने तीन साल के पुत्र को कम्बल ओढ़ाकर, गोद में बिठाकर गाड़ी में सफर कर रही थी। खिड़की से तेज ठण्डी हवा आ रही थी और बच्चा इधर-उधर घूमने के प्रयास में बार-बार कम्बल को फेंक रहा था, माँ पुन: ओढ़ाती थी। तभी माँ को एक युक्ति सूझी। उसने पास बैठे डरावने व्यक्तित्व वाले एक भाई को कहा, जरा बच्चे को डराइये तो सही ताकि यह स्थिरता से बैठे। उस व्यक्ति ने अपनी लाल-लाल आँखें निकालते हुए बच्चे को डराया कि बाहर निकलते ही मैं उठा ले जाऊँगा। बच्चा सचमुच डर गया और स्थिर भी हो गया। परमात्मा पिता भी जब देखते हैं कि बच्चे श्रीमत की पटरी से उतर गए हैं तो सृष्टि-ड्रामा की नूंध प्रमाण कोई न कोई विघ्न आकर हमें भी हमारी स्थिति में स्थिर कर देता है अत: विघ्न का आना अर्थात् स्थितप्रज्ञता की ओर बढ़ना।

कमाल से पूर्व जवाल

जितनी बार विघ्नों पर विजय प्राप्त करते हैं उतनी ही आध्यात्मिक प्रगति होती जाती है। इसलिए ईश्वरीय महावाक्य हैं, ''यदि तुम मेरी ओर एक कदम बढ़ाओगे तो मैं तुम्हारी ओर 100 कदम बढ़ाऊँगा। यदि तुम मुझसे एक कदम पीछे हटोगे तो मैं तुम

से 100 कदम पीछे हटूँगा।'' याद रहे, एक कदम भी ईश्वरीय मार्ग से पीछे नहीं हटना है, नहीं तो संसार की बुराइयाँ घसीट ले जाएंगी। विघ्न के बाद आध्यात्मिक अवस्था में प्रगति अवश्य होनी है क्योंकि संगमयुग चढ़ती कला का युग है अत: कला को उन्नत तो होना ही है। कमाल से पूर्व जवाल (अवनति) अवश्यम्भावी है अन्यथा कमाल (प्रगति) को किसकी भेंट में कमाल कहा जाए? अत: जो हुआ उसकी चिन्ता न कर प्रगति का पुरुषार्थ करें, बिना पुरुषार्थ, प्रगति स्वयं चलकर हमारे पास नहीं आएगी।

– ब्र.कु. आत्म प्रकाश

धन्यवाद बाबा

कौस्तुभ दास (कुश), 11 वर्ष, बोकारो (झारखण्ड)

राजधानी एक्सप्रेस तेज गति से भाग रही थी हावड़ा स्टेशन से दिल्ली की ओर। मैं माँ के साथ यात्रा कर रहा था। खा-पीकर साइड बर्थ पर अपना बेड रोल बिछाया। सोने के पहले आदत के अनुसार वाशरूम की ओर गया। अचानक वाशरूम के दरवाज़े पर थपथपाहट व माँ की आवाज़! दरवाज़ा खोला तो देखा, डर के मारे माँ बुरी तरह काँप रही थी। बर्थ की ओर बढ़ा तो पाया, एक खासी भीड़ जमा थी वहाँ। कई यात्री माँ को बधाई दे रहे थे, 'आप बड़ी लक्की हैं, बच्चा बाल-बाल बच गया।' मेरे भी रोंगटे तब खड़े हो गये जब देखा कि मेरे बिछे हुए बिस्तर पर टूटे काँच के नुकीले टुकड़े भरे पड़े थे। बगल की खिड़की का काँच चकनाचूर था, वो भी ए.सी.बोगी का डबल काँच!! किसी नटखट बच्चे या किसी पागल ने चलती गाड़ी पर पत्थर मारा था। दो मिनट पहले अगर मैं वाशरूम न जाकर अपनी बर्थ पर बैठा होता तो वे नुकीले काँच मुझे लहूलुहान कर देते या फिर पत्थर ही से हताहत हो जाता! मेरे मुँह से अनायास दो शब्द निकल पड़े ''धन्यवाद बाबा''।

यहाँ एक बात बता दूँ कि मेरे दादा जी, दादी जी व बुआ वर्षों से ब्रह्माकुमारीज़ ज्ञान में चलते हैं अचल-अडोल। मैं तो बच्चा हूँ इसलिए इस सत्य घटना को लिखने में थोड़ी-सी मदद दादीजी की भी लेनी पड़ी।

आओ सच्ची दीवाली मनायें

ब्रह्माकुमारी नीलम, किंग्सवे कैंप, दिल्ली

आओ मिलके सच्ची दीवाली मनायें।
दिव्य गुणों से जीवन का आंगन सजायें।।

न अब कोई दु:ख हो, न गम का अन्धेरा।
लगे रात भी, जैसे रोशन सवेरा।
संगमयुग में आत्म ज्योत हम जगायें।
आओ मिलके सच्ची दीवाली मनायें।।

न झगड़ा हो आपस में हमारा-तुम्हारा।
बनें एक-दूजे का हम-तुम सहारा।
रंग-बिरंगे हम सब मिलकर एक हो जायें।
आओ मिलके सच्ची दीवाली मनायें।।

ये यादगार है त्यौहार हमारा।
ये सन्देश है, एकता का इशारा।
जो कर्त्तव्य हैं आज उनको हम निभायें।
आओ मिलके सच्ची दीवाली मनायें।।

किसी का न भय से हो सिर नीचा।
हिमालय की तरह रहे शीश ऊँचा।
दिल के घावों पे ज्ञान-योग का मलहम लगायें।
आओ मिलके सच्ची दीवाली मनायें।।

'पत्र' संपादक के नाम

ज्ञानामृत के सम्पादकीय लेख बहुत पसंद आते हैं। ऐसा लगता है कि उन्हें दिल पर छाप लेना चाहिए। दुनिया भर की पत्र-पत्रिकाओं में इसका बड़ा महत्व है। इसमें प्रकाशित जीवनोपयोगी, व्यवहारिक अनुभूतियों द्वारा जीवन ही बदल जाता है। पुण्य कर्म के रास्ते खुल जाते हैं, अतीन्द्रिय सुख का अनुभव होता है। यह अत्यंत ज्ञानवर्धक और मार्मिक है।

– ब्रह्माकुमार मोतीराम मराठे, जलगाँव

'ज्ञानामृत' मेरी प्रिय दोस्त है जिसमें मुझे अपनी हर समस्या का समाधान मिल जाता है। मेरे स्टाफ के सभी व्यक्ति इसमें प्रकाशित अनुभवों को बड़ी रुचि से पढ़ते हैं। निराशा में आशा जगाने में, तनावमुक्त और खुशहाल बनाने में, आत्मविश्वास बढ़ाने में, सकारात्मक चिंतन करने तथा हर परिस्थिति में प्रसन्न रहने और व्यक्तित्व को निखारने में इस पत्रिका का अमूल्य योगदान है।

– गायत्री वर्मा, अध्यापिका, जोबट, अलिराजपुर

'ज्ञानामृत' कहती है, बुराई को छोड़ो और अच्छाई से चिपक जाओ। सद्गुणों की खान बनो, दुर्गुणों को गहरे गड्ढे में दफना दो। जो गिरा है उसे उठाओ और सहारा दो। निचाइयों की ओर मत झाँको, ऊँचाइयों की ओर देखो। ऐसी प्रेरणा मुझे इस पुनीत पत्रिका से प्राप्त हो रही है और भविष्य में प्राप्त होती रहेगी, ऐसा मेरा विश्वास है।

– अत्तर सिंह, सूरजपुर (गोधा), अलीगढ़

यथा नाम तथा गुण से परिपूर्ण ज्ञानामृत पत्रिका को पढ़ कर ज्ञान, योग, धारणा एवं सेवा को साकार रूप देने में बहुत आनन्द की अनुभूति होती है। संपादकीय लेख से गुणों को ग्रहण करने की प्रेरणा मिलती है। ब्र.कु.रमेश शाह की आदर्श व्यवस्था और अनेक परमात्म पुत्रों के जीवन सुधारक लेख निरन्तर पढ़ते रहने का दिल करता है। नकारात्मक को सकारात्मक रूप देना, मीठा बोलना, कम बोलना, तर्क-वितर्क में संयम न गंवाना, क्षमा करना, गुण आंकना तथा गुण अपनाना, यह प्रेरणा इस पत्रिका के माध्यम से निरन्तर मिलती है।

– बाल मुकन्द शर्मा, पूर्व अध्यापक, बन्जार, कुल्लू

'ज्ञानामृत' के लेख मन लगाकर पढ़ता हूँ, शान्ति मिलती है।

सागर है ये ज्ञान-अमृत की, ज्ञान देती है सदा।
जो भी पाता आदमी, हो जाता इस पर फिदा।
जो भी पुस्तक ये पढ़ेगा, ज्ञान बढ़ता जायेगा।
भूलकर भी जिन्दगी में, मात वो ना खायेगा।।

– बन्सीलाल लड्ढ़ा, एडवोकेट, कपासन (राज.)

ज्ञानामृत के स्वर्ण जयंति विशेषांक के सादर सम्पादन पर वेदांग ज्योति पत्रिका परिवार की ओर से सादर हार्दिक बधाई स्वीकार करें।

ज्ञान की सुन्दर अभिव्यक्ति, नाना प्रकरणों की है प्रस्तुति।।
मृत-तुल्य जीवों की ज्योति, तत्व बोध हमें यह कराती।।

– ब्रह्मर्षि वैद्य पं.नारायण शर्मा कौशिक
प्रधान सम्पादक (अवैतनिक), वेदांग ज्योति

अगस्त 2014 की 'ज्ञानामृत' पत्रिका एक शुभचिंतक द्वारा पढ़ने को मिली। 'कर्मों का खाता' में तर्कसंगत उदाहरण के साथ व्याख्या की गई है जो मानव जीवन के लिए मूल्यवान संदेश है। यह गीता सार की तरह ज्ञानवर्धक पत्रिका है। जब पूरी पत्रिका पढ़ी तो मुझे आत्मा का ज्ञान हुआ। इसे पढ़ने से शारीरिक ऊर्जा, श्रेष्ठ संस्कार के साथ सद्बुद्धि का प्रकाश मिला। स्वर्ण जयन्ती के शुभ कामना संदेश काफी रोचक रूप से प्रकाशित किये गये। इसके लिए आभार प्रकट करता हूँ।

– सुमन भारती, जितवारपुर (बिहार)

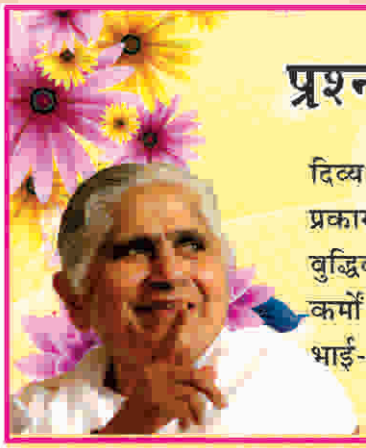

प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के

दिव्य बुद्धि के वरदान से विभूषित आदरणीया दादी जानकी जी, हर प्रकार के प्रश्नों के उत्तर देकर आत्मा को संतोष से भर देती हैं। बुद्धिवानों की बुद्धि बाबा ने उन्हें ऐसी कला प्रदान की है कि वे उलझे कर्मों की गुत्थियाँ सुलझाकर समाधानस्वरूप बना देती हैं। प्रस्तुत हैं भाई-बहनों द्वारा पूछे गए प्रश्नों के दादी जानकी द्वारा दिये गये उत्तर

– सम्पादक

प्रश्नः- किसी के संस्कार का वर्णन करने से क्या नुकसान होगा?

उत्तरः- अच्छी बातें तभी अन्दर काम करेंगी, जब देह-अभिमान वाली बातों में जाने का संस्कार न हो। अच्छी बातों को जो यूज़ करते हैं, वे कभी किसी संस्कार-स्वभाव के वश नहीं होते। गीता में भी है कि इसका दोष नहीं है, यह स्वभाव के वश है इसलिए कभी किसी के स्वभाव-संस्कार का वर्णन नहीं करना, नहीं तो वो तुम्हारा भी स्वभाव-संस्कार बन जायेगा। किसी के स्वभाव-संस्कार के बारे में सोचना, वर्णन करना यह भी स्वभाव हो जायेगा इसलिए स्व को सम्भालो। प्रकृति के स्वभाव के वश न रहो। अपने स्वभाव को वश में रखो।

प्रश्नः- बाबा के कमरे में, बाबा की दृष्टि लेने का क्या महत्व है?

उत्तरः- खुशी में रहना और खुशी बाँटना, यह भगवान ने भाग्य दिया है। कभी भी न खुश होना माना जो दिया है, वो वापस ले लेगा, चला गया वापस, नहीं आयेगा फिर। अभी समय बहुत नाज़ुक है। जितना भगवान भोलानाथ है, उतना धर्मराज भी है। समर्पण की खुशियाँ मनाओ क्योंकि ईश्वर को समर्पण हो गये। कोई इन्सान को समर्पण नहीं हुए हैं इसलिए किसी के दबाव या झुकाव में आ नहीं सकते। वन्डरफुल ईश्वर है, हम भी भाग्यशाली हैं, हमको और बातों के लिए सोचने वा बोलने के लिए टाइम ही नहीं है। तभी तो कभी बाबा के सामने जाओ, बाबा के सामने बैठो तो गुम हो जायेंगे। बाबा को देखते-देखते बाबा जैसे बनो। इसके लिए अन्दर की कमी-कमज़ोरी को खत्म करने की लगन हो, बाबा की दृष्टि से वो कमी कम होते-होते खत्म हो जायेगी। बाबा ने एक मुरली में कहा, तुम भी ऐसे टावर बन जाओ तो सबका ध्यान जाये। नॉलेज, लव, प्युरिटी, पावर से भरपूर रहो तो टावर की तरह बन जाओगे।

प्रश्नः- स्मृति स्वरूप बनने में सबसे बड़ी बाधा क्या है?

उत्तरः- बाबा कहते, सब कुछ भूल मुझे याद करो। सब कुछ भूल याद करेंगे तो आखिर वो घड़ी आ जाएगी, नष्टोमोहा...। कहीं भी कोई भी देह-सम्बन्धियों में अथवा अपने विचारों में भी मोह न हो। मोह दुःखदाई है। मोह स्मृति-स्वरूप बनने नहीं देता है। कमज़ोरी की बातें न चाहते भी यूज़ करते हैं तो बहुत नुकसानकारक है। थोड़ा भी लगाव व्यक्ति से या वैभव से है या अपने कमरे से है तो वो क्या ऊंच पद पायेंगे? तुम्हारा कमरा ऐसा हो जैसे बाबा का कमरा, तो समझें तपस्वीमूर्त है, देख करके ही खुश हो जायें। कोई भी प्रकार की कमी को जब कोई अनुभव करता है ना, तो वह कमी जा सकती है क्योंकि वो समझती है, मेरा अन्त आने वाला है। सुस्ती, आलस्य, अलबेलापन, बहाना और सूक्ष्म ईर्ष्या अन्दर है तो मुसकराना नहीं आयेगा इसलिए बाबा कहते, मेरी याद में रहो तो पहले वाला जंक उतर जाए और अभी कोई जंक चढ़ न जाए इसलिए परिपक्व याद की ऐसी स्थिति बनाओ और सदा उसको

यूज़ करो। थोड़े में खुश नहीं होना चाहिए। बाबा ने मनमनाभव का वरदान दे दिया, फिर बुद्धि को कहते हैं, मध्याजी भव। लक्ष्य को सामने रखो (लक्ष्य सोप है)। भले ज्ञान रूपी पानी मिलता है फिर भी सोप के बिगर सफाई नहीं होगी। ज्ञान सुनेंगे, सुनायेंगे, अच्छा लगता है, मन शान्त हो जाता है। मनमनाभव होने से अंग-अंग शीतल, योगी के अंग शीतल होते हैं। शीतल शब्द बहुत अच्छा है, शीतला देवी का पूजन है। कोई भी प्रकार की गर्म नेचर नहीं है, शीतल नेचर है। बाबा ने अपने संग के रंग में हमारे सारे पाप खलास कर दिये हैं तब तो इतने शीतल हैं। राजयोग इज़ी तब लगता है जब बाबा से इज़ी हूँ, बाबा जहाँ रखे, जो चाहे सो कराए। भक्ति में भी कहते हैं, जो हरि की इच्छा। अन्दर से सच्चाई और प्रेम की गंगा बहानी होती है भागीरथ के समान, तो ऐसे आप भी आनंद लो। थोड़ा देखो, मेरा मस्तक कैसा है! बाबा जैसा है! जब तक वह अपने जैसा नहीं बनाता है तब तक छोड़ता नहीं है। भगवान पीछे उसके पड़ेगा जो सच्ची सजनी होगी।

प्रश्नः- हमारा दिमाग ठण्डा कब रह सकता है?

उत्तरः- ज्ञान-मार्ग में न कोई पोजिशन चाहिए, न पैसा चाहिए, इनसे जो फ्री रहते हैं उनका दिमाग ठण्डा रहता है, स्वभाव सरल रहता है, सहजयोगी हैं। न अधीन हैं, न किसी को अधीन बनाके रखा है कि मैं मर जाऊं तो यह कहाँ से खायेगा? बाबा ने प्रैक्टिकल अपना मिसाल दिखाया, अव्यक्त हो करके भी ऐसी हमारी सम्भाल कर रहे हैं, वन्डरफुल है। किसी को यह फीलिंग नहीं है कि हमने साकार को नहीं देखा, ऐसी पालना अव्यक्त हो करके कर रहे हैं। फिर कहते हैं, मैं नहीं करता हूँ, कराने में होशियार है। भगवान किसी का भाग्य बनाने में बहुत होशियार है। एक त्याग से भाग्य बनाया, दूसरा कर्म से भाग्य बन गया।

प्रश्नः- दिन-रात आपके स्वप्नों में कौन-सी बात रहती है?

उत्तरः- मेरे दिल से पूछो तो दिन-रात स्वप्नों में भी यही रहता है कि बाबा की दिल कैसी है, ऐसी मेरी दिल बन जाए। कोई अपनी बात शब्दों में नहीं सुनाये, सुनाने के पहले ही उनके दिल का संकल्प या शुभ भावना पूरी हो जाये। ऐसा सिम्पल और सैम्पल बनना माना बाबा के दिल को समझ के ऐसा बनना। दिल की आवाज़ शब्दों में नहीं होती है, सूक्ष्म कैच कर लेते हैं तो फिर शब्दों में आने की ज़रूरत नहीं है, सहज समझ जाते हैं। अगर ऐसे दिलवाला मन्दिर में रहना है तो बाबा के दिल को समझो। व्यर्थ समय नहीं गँवाओ, यह श्रीमत शिव भगवानुवाच है ब्रह्मा बाबा के द्वारा। आज उसी श्रीमत अनुसार ही चारों सबजेक्ट में ध्यान रखने में सफल हैं। यह भी पढ़ाने वाले के प्रति रिगार्ड है। चारों सबजेक्ट में पास होंगे, पास विद् ऑनर में जो आयेंगे, वही अष्ट रत्न होंगे। समय अनुसार पुरुषार्थ ऐसा हो जो सफलता छिम-छिम करके आये। कभी क्वेश्चन नहीं उठता है, सफलता कब होगी! छिम-छिम करके आ रही है।

प्रश्नः- हम यूथ आप जैसी 14 वर्ष तपस्या कर सकते हैं?

उत्तरः- क्यों नहीं, एक बाबा दूसरा न कोई, यह पाठ पक्का कर लो। अशरीरी भव का अनुभव ऐसे हो जो लगातार शक्तिशाली पुरुषार्थ चलता रहे। पुरुषार्थ में आलस्य-अलबेलापन न रहे। दृष्टि-वृत्ति की एक्टीविटी को एक्यूरेट करना माना पक्का बन जाना, यही तो भट्ठी करना है। जैसे भट्ठी में वो ईंटें पक्की हो जाती हैं तभी उन्हें दीवारों में यूज़ करते हैं। भट्ठी में कोई कच्ची ईंट रह जाती है तो फेंक देते हैं। तो अभी ऐसी भट्ठी करो जो पक्के रहो, अभी तो ऐसी भट्ठी हर एक कर सकता है। कभी न कभी कोई ने ऐसा अच्छा पुरुषार्थ किया है जो आज स्व सहित सर्व के काम में आ रहा है।

प्रश्नः- आप बाबा को एक ऐसा कौन-सा टाइटल देंगे जिसमें बाबा की सब विशेषतायें आ जायें?

उत्तरः- जानी-जाननहार।

❖

ईश्वरीय कारोबार में आदर्श व्यवस्था संपन्न करने की ज़रूरत – 12

* ब्रह्माकुमार रमेश, मुंबई (गामदेवी)

सतयुगी कारोबार में दक्षता अर्थात् मास्टर ऑफ डिवाइन एडमिनिस्ट्रेशन (Master of Divine Administration) की इस शृंखला में आज हम एक नये गुण पर विचार करेंगे। वह गुण है Creativity अर्थात् सृजनात्मकता, रचनात्मकता या निर्माण करने की शक्ति।

हम अभी अपने पुरुषार्थ द्वारा अपने सतयुगी भाग्य का निर्माण कर रहे हैं। सतयुगी दुनिया में श्री लक्ष्मी-श्री नारायण द्वारा अपनी प्रजा की पालना होगी और हम सबको भी अपनी प्रजा तथा परिवार की पालना करनी होगी और इसलिए वहाँ हमें सृजनात्मक कर्त्तव्य रूपी गुण धारण करना होगा।

बाबा के सेवाकेन्द्रों पर भी दोनों प्रवृत्तियाँ साथ-साथ चल रही हैं अर्थात् सेवाकेन्द्र पर आत्माओं को लाने का निर्माण कार्य तथा नियमित रूप से आने वालों को ईश्वरीय पालना देने का कार्य चल रहा है। हमें संगमयुग पर ही नवनिर्माण और पालना ये दोनों रचनात्मक कार्य करने होंगे क्योंकि सतयुग में तो ज़्यादातर पालना का ही कार्य होगा तथा अपने राज्यविस्तार का निर्माण करना होगा।

शास्त्रों में भी गायन है कि परमात्मा ने सृष्टि रची है जिसे संस्कृत में कहते हैं स्व-इक्षत:। जब परमात्मा को नई सृष्टि रचने का संकल्प आया तब परमात्मा का स्वरूप बदली हुआ और नये स्वरूप का नाम हुआ ईश्वर। आदि शंकराचार्य से जब पूछा गया कि परमात्मा को सृष्टि रचने का संकल्प क्यों आया तो उन्होंने उत्तर दिया कि वो तो रचयिता है और रचयिता को रचना रचने का संकल्प क्यों आया यह रचना द्वारा प्रश्न ही नहीं उठता। इस प्रकार सृष्टि के आदिकाल से ही रचनात्मक प्रवृत्ति करने का कार्य चला आ रहा है जिसे हम ज्ञान की भाषा में कहते हैं कि परमात्मा को विश्व परिवर्तन का कार्य करना था इसलिए उन्होंने इस सृष्टि पर प्रजापिता ब्रह्मा को निमित्त बनाया और उनके माध्यम से विश्व परिवर्तन के इस विशाल कार्य को शुरू किया। इस समय परमात्मा प्रजापिता ब्रह्मा के साथ अन्य ब्राह्मणों द्वारा नई सृष्टि स्थापन करने का कार्य सम्पन्न कर रहे हैं।

शिवबाबा ने पहले-पहले ब्रह्मा बाबा के तन का आधार लिया और उन्हें निमित्त बनाकर इस रचनात्मक प्रवृत्ति के महानतम कार्य के लिए प्रेरित किया और ब्रह्मा बाबा ने अपने परिवार, व्यवसाय आदि सबसे दूर होकर यह कार्य शुरू किया। ब्रह्मा बाबा का सिंध-हैदराबाद में एक मकान था जिसका नाम जसोदा भवन था। सबसे पहले एक 10' × 10' के कमरे में शिवबाबा ने ब्रह्मा द्वारा अपना कार्य शुरू किया और वही स्थान आदि स्थान बना। संख्या बढ़ गई तो बाबा ने एक दीवार तोड़ दी और वह 20' × 10' का कमरा हो गया। जगह छोटी पड़ी तो फिर एक दीवार तोड़ी और 30'×10' का हॉल बन गया परंतु बाद में संख्या और बढ़ गई तो कम्पाउण्ड में क्लास शुरू किया। इस प्रकार ब्रह्मा बाबा ने निमित्त बनकर परमात्मा के कार्य में अपनी अंगुली दी और उनके मददगार के रूप में मातेश्वरीजी तथा अन्य परिवार आये जिन्होंने इस महानतम विश्व नव निर्माण के कार्य में अपना योगदान दिया।

दुनिया में जो रचयिता होते हैं उनके द्वारा ही सृजन का कारोबार होता है और वे जब शरीर छोड़कर चले जाते हैं तो उनका कारोबार एकदम ठंडा हो जाता है, ऐसा मैंने कई साधु-महात्माओं के संदर्भ में देखा है।

राजस्थान के पूर्व गर्वनर भ्राता श्री एम.चेन्ना रेड्डी जी जो हमारी संस्था में कई बार आ चुके थे, एक बार पुट्टपर्थी में सत्य साईं बाबा के पास गये थे और पूछा था कि क्या आपने किसी को अपने जैसा योग्य बनाया है जो आपके जाने के बाद आपके जैसा रचनात्मक कारोबार कर सके तथा उसको बढ़ा सके तो सत्य साईं बाबा ने कहा कि नहीं, मैंने ऐसा किसी को योग्य नहीं बनाया है। फिर भ्राता चेन्ना रेड्डी ने कहा कि मैं अभी-अभी माउन्ट आबू से आया हूँ। वहां पर मैंने 3000 बहनें देखीं जिनमें ब्रह्मा बाबा और दादी प्रकाशमणि जी ने जो कार्य किये हैं, उन्हें उसी तीव्र गति से आगे बढ़ाने की क्षमता एवं योग्यता है। हम देखते हैं कि सत्य साईं बाबा और दादी प्रकाशमणि जी की प्रशासनिक योग्यता में ज़मीन-आसमान का अंतर है। ब्रह्मा बाबा के 1969 में अव्यक्त होने तक भारत में 300-350 सेवाकेन्द्र थे। ब्रह्मा बाबा के बाद दादी प्रकाशमणि जी ने इस कार्य को इतना आगे बढ़ाया कि 25 अगस्त, 2007 को जब दादीजी अव्यक्त हुए तब इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय की विश्व के पाँचों खण्डों में 8000 से भी अधिक शाखायें थीं। भारत देश के तो कोने-कोने में इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय की शाखायें हैं।

मुझे याद है, 1969 में जब ब्रह्मा बाबा अव्यक्त हुए तब कुछ सिन्धी भाई-बहनों को लगा कि अब इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय का कारोबार कौन सम्भालेगा और यह तो खत्म हो जायेगा और इस कारण दादीजी को फोन करके पूछा कि अब आपकी संस्था का क्या होगा। हम सभी भी सोच रहे थे कि क्या होगा परंतु 19 जनवरी, 1969 को शिवबाबा संतरी दादीजी के तन में आये और कहा कि अग्निसंस्कार के बाद आप भोग लगाओ, मैं आकर आप बच्चों को सब प्रकार की श्रीमत दूँगा कि क्या-क्या करना है। इसके बाद दादी जी ने बाबा की श्रीमत अनुसार सेवायें की।

जब मैं तिरुपति गया था तो वहाँ के मुख्य अधिकारी ने कहा कि इस मंदिर में श्री बालाजी की मूर्ति है और लोग श्रद्धा भावना से जो धन आदि देते हैं उसे हम सम्भालते हैं। यहाँ पर जो लोग कार्य करते हैं वे सभी वेतन लेते हैं परंतु आपके ईश्वरीय विश्व विद्यालय जैसे समर्पित भाई-बहनें यहाँ नहीं हैं। हमारे पास 18000 लोग काम करते हैं परंतु उन सभी की यही प्रवृत्ति है कि काम करो और वेतन पाओ और वर्ष के अंत में बोनस या इंक्रीमेंट प्राप्त करो। तब मैंने उन्हें कहा कि हमारे पास जो भी समर्पित भाई-बहनें हैं वे सभी शिवबाबा के वारिस हैं और वारिस कभी नौकर नहीं होते हैं इसलिए उन्हें कभी बोनस या इंक्रीमेंट या तनख्वाह प्राप्त करने की इच्छा नहीं होती है। तब उन्होंने कहा कि सचमुच आप की संस्था महान है।

हरिद्वार के एक संत ने मुझे कहा कि आपकी संस्था का आधार रेत पर है और ब्रह्मा बाबा के अव्यक्त होने के बाद आपकी संस्था समाप्त हो जायेगी। तब मैंने उन्हें कहा कि मैंने भी इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय के फाउण्डेशन को 8 वर्ष तक अर्थात् 1952 से हिलाने का अत्यधिक प्रयास किया, मैंने बहुत डिबेट आदि की, मैं हिला परंतु संस्था के फाउण्डेशन को नहीं हिला सका। ऐसी अनेक संस्थायें हैं जिन्होंने इस संस्था के फाउण्डेशन को हिलाने का हर संभव प्रयास किया। इस संस्था से जुड़ने से पहले मैं जिस संस्था में जाता था उनके मुख्य प्रणेता श्री पाण्डुरंग शास्त्री जी थे। मैंने उनसे कहा कि काम और क्रोध नर्क के द्वार हैं परंतु सभी इन सिद्धांतों के विपरीत ही चलते हैं तो क्या आप हमें इन पर विजय दिला सकते हैं। उन्होंने कहा कि पवित्रता पर चलाना ईश्वर का कार्य है और जब मैंने जापान में आपकी संस्था का कार्य देखा तभी समझ गया कि इसका रचयिता ईश्वर ही है।

दुनिया में जो भी कारोबार हो रहे हैं, उनमें अगर योग्य व्यक्ति नहीं होते हैं तो वह कार्य आगे नहीं बढ़ता। हम

आत्मायें, जो शिवबाबा के बच्चे हैं, उनमें स्वयं परमपिता परमात्मा ने विशेषतायें भरी हैं। इस कारण ही हम बच्चे अच्छे से अच्छी सेवायें कर रहे हैं। परिणामत: देश-विदेश में अनेक सेवाकेन्द्र, उप-सेवाकेन्द्र, गीता-पाठशालायें तथा क्लासेज खुली हैं और उनके द्वारा लाखों आत्माओं का कल्याण हो रहा है। अगर अभी भी अचानक का पार्ट शुरू हो और यह विशाल कार्य सम्भालना पड़े तो भी हम सभी निमित्त बन बाबा का यह कार्य सुचारु रूप से चला सकते हैं, इतने तक परमात्मा ने हम बच्चों को रचनात्मक कार्य करने योग्य बनाया है।

मोजेस (ज्यू धर्म स्थापक) ने कहा था कि मैं मानता हूँ कि कला, कला के लिए होनी चाहिए और इसलिए उन्होंने रचनात्मक कार्य एवं कला के कार्य में भेद किया था। नये विश्व की रचना के कार्य में भी रचनात्मकता की यह कला काम में आयेगी। नये विश्व की रचना के परमात्मा के कार्य में मददगार बनने के लिए हम सभी ब्राह्मण आत्माओं में भी उमंग-उत्साह होना चाहिए।

इतिहास में भी हम देखते हैं कि औरंगज़ेब के बाद उनके जो भी वारिस थे वे महत्वाकांक्षी एवं शक्तिशाली नहीं थे परिणामत: उनका साम्राज्य खत्म हो गया। शिवाजी महाराज के ।पुत्र संभाजी महाराज तथा पौत्र शाहु महाराज जब तक थे तब तक ही मराठा साम्राज्य अच्छी रीति से चला बाद में जब यही कारोबार पेशवाओं के हाथ में गया तो वे ठीक रीति से राज्य कारोबार नहीं कर पाये और परिणामस्वरूप मराठा साम्राज्य का अस्त हो गया। इस प्रकार रचनात्मकता के आधार पर साम्राज्य तो स्थापित हो जाता है परंतु उस साम्राज्य को आगे बढ़ाना बहुत कठिन कार्य है जिसके लिए शक्तिशाली सेना एवं साम्राज्य को चलाने वालों में एकता का होना अति आवश्यक है।

शिवबाबा ने हमें प्रेरणा देते हुए कहा है कि हरेक आत्मा को अपनी राजधानी स्थापन करनी है और हरेक को रचनात्मक कार्य करना है। जिसने जितनी जास्ती सेवायें की होंगी, अपना और औरों का जीवन श्रेष्ठ बनाया होगा उतना ही वह आत्मा भविष्य में भी ऊँच पद की प्राप्ति करेगी।

हमें रचयिता के रचनात्मक कार्य और उनकी रची हुई रचना का भेद जानना बहुत जरूरी है।

भक्तिमार्ग में कहते हैं कि परमात्मा की रचना अगर ऊँचकोटी का पुरुषार्थ करे तो वह रचयिता जैसे बन सकते हैं अर्थात् ज्योति में ज्योत समा सकते हैं। परंतु शिवबाबा ने हमें यह बहुत महीन बात बताई है कि रचना सदा ही रचना होती है, वह रचयिता नहीं बन सकती और रचयिता सदा रचयिता ही होता है, वह रचना नहीं बन सकता अर्थात् परमात्मा की रचना आत्मायें कभी भी परमात्मा नहीं बन सकतीं और शिवबाबा सदा ही शिवबाबा रहता है इसलिए उसे सदाशिव कहते हैं।

हमारे कई ब्रह्माकुमार भाई-बहनों के मन में यह प्रश्न उठता है कि परमात्मा ने जब इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय की स्थापना की तभी हमें इस ज्ञान में सम्मिलित क्यों नहीं किया, ऐसा प्रश्न एक भाई ने भी ब्रह्मा बाबा से किया तो ब्रह्मा बाबा ने जो उत्तर दिया वह लिखता हूँ – बच्चे अगर आप स्थापना के समय आते तो अब तक भाग जाते थे इसलिए अपने समय पर आये, अच्छा हुआ। इसके बारे में मेरी राय यह है कि सृष्टिचक्र अविरत चलता रहता है और उसमें सबकी जरूरत समय प्रति समय पड़ती रहती है और इसलिए 1937 से अगर आप आते तो या तो आप बुजुर्ग हो जाते थे या शरीर छोड़ देते थे तो फिर यह आगे की धरोहर सम्भालने के लिए कौन निमित्त बनता? इसमें पहले या बाद में आने की कोई बात नहीं है। रचयिता परमात्मा ने सृष्टि के सृजन के कार्य में आपको निमित्त बनाया है। परमात्मा के सृजन कार्य को समझना ज़रूरी है इसलिए हमने रचनात्मकता के ऊपर यह लेख लिखा है। ❖

गतांक से आगे...

सार्वभौमिक बंधुत्व का आधार मित्रता

* ब्रह्माकुमार नरेश, मुजफ्फरनगर

सच्चा मित्र कौन है? सच्चा मित्र वह है जिसके सामने अपना अहम् या अभिमान कार्य नहीं करता, जिसके सामने व्यक्ति दिल खोल कर हर प्रकार की बातें कर सके, जो दूसरे की सारी कमज़ोरियों व बुराइयों को जानते हुए भी उससे मित्रता जारी रखे व उसे सही राह दिखाए, जो बुरे वक्त में काम आए, जो दूसरे द्वारा पीठ पीछे निंदा किए जाने पर भी उसका शुभचिन्तक बना रहे, जो दूसरे पर एहसान करने के बाद भी उससे कोई अपेक्षा न रखे और जो दूसरे द्वारा वादा ख़िलाफ़ी करने के बाद भी बुरा न माने और दूसरे पर पूर्ववत् स्नेह बनाए रखे। ज़ाहिर है कि ऐसा मित्र तो देवता समान होगा, जो कि आज के कलियुगी समाज में मिलना मुश्किल है। परन्तु यह मनुष्यों के लिए खुशखबरी है कि ऐसा मित्र कलियुग के अन्त में सहज उपलब्ध होता है और वह है स्वयं परमपिता परमात्मा शिव। परन्तु उसे मित्र रूप में भी प्राप्त किया जा सकता है, यह बात कुछ व्यक्तियों को अजीब लग सकती है क्योंकि उन्होंने ईश्वर को या तो 'परमपिता' के रूप में जाना है, या 'दाता' के रूप में। जिस प्रकार एक आम आदमी देश के प्रधानमंत्री से मित्रता होने की बात सोच भी नहीं सकता, उसी प्रकार वह ईश्वर से मित्रता हो सकने की बात सोच नहीं पाता। आज का भक्त यह जानता है कि पाण्डवों की श्रीकृष्ण से मित्रता थी और कौरवों से शत्रुता। आज के सन्दर्भ में पाण्डव कौन हैं, कौरव कौन हैं और श्रीकृष्ण कौन है, यह रहस्य स्वयं परमपिता शिव ब्रह्माकुमारियों के माध्यम से उजागर कर रहे हैं।

पक्षियों में है संकट को भांपने की शक्ति

अटूट मित्रता का प्राण है दिल का सच्चा प्रेम। कई बार मित्रों में प्रेम का अभाव होने लगता है। यदि शुरू से ही मित्रता की डोर पर प्रेम का मांझा लगता रहे, तो यह फिर परिस्थितियों के आंधी-तूफान से भी टूटती नहीं है बल्कि परिस्थितियां ही मित्रता की पहचान कराती हैं। सुख व सफलता में दुनिया हमें पहचानती है परन्तु परिस्थितियों के आने पर हम अपने चालाक मित्रों को पहचान लेते हैं। एक बाल-चरवाहा था जिसे पक्षियों से बड़ा प्रेम था। वह जंगल में गायों को चराने जाता, तो पक्षी उसे घेर लेते। वे उसके कंधे पर, सिर पर बैठ कर चहकते और वह बालक भी उन्हें हाथ में उठा कर उनसे बातें करता था। एक दिन उस बालक के बीमार पिता ने कहा कि बेटा, तू जंगल में चला जाता है और सारे दिन मैं यहां अकेले बोर होता हूं। मुझे पता है कि तेरी पक्षियों से गहरी मित्रता है। तू एक पक्षी मेरे लिए ले आना। मैं उसे पिंजरे में रख कर खिलाऊंगा, बातें करूंगा और मेरा समय अच्छा कट जाएगा। अगले दिन जब वह बालक जंगल में पहुंचा, तो एक भी पक्षी उसके पास नहीं आया। उस बालक के मन में प्रेम के स्थान पर चालाकी से पक्षी पकड़ने की बात थी और उसकी भावना को पक्षियों ने परख लिया था। पक्षी चूंकि सरल व निर्मल हृदय होते हैं अत: कुदरत ने उन्हें संकट को भांपने की शक्ति भी प्रदान की है। यही कारण है कि एक दशक पहले जब सुनामी की लहरों ने बर्बादी का तांडव किया था, तो उससे थोड़ा पहले पशु-पक्षी समुद्र तट के पास के अपने निवास को छोड़ कर सुरक्षित स्थानों पर चले गए थे।

शत्रुओं को खत्म करना अर्थात् उन्हें मित्र बना लेना

यदि किसी चीज़ के नष्ट होने के बाद कुछ भी न बचे तो कोई बात नहीं परन्तु मित्रता के नष्ट होने पर तो शत्रुता बचती है। ऐसे में यदि दो मित्रों में से कोई एक समझदारी दिखाए और

अपनी तरफ से सम्बन्ध पूर्ववत् सामान्य रखे, तो दूसरे का शत्रुभाव भी पिघलने लगता है। कुछ ही समय बाद उसे अपनी गलती का बोध होता है और वह अपने मित्र से संबंधों को पूर्ववत् बना लेता है। शत्रुता तब स्थापित होती है जब दोनों व्यक्ति शत्रुता का भाव रखें परन्तु मित्रता तो दोनों में से किसी एक के मैत्रीभाव से ही पुनर्स्थापित हो जाती है। इससे यह सिद्ध होता है कि मित्रता की शक्ति, शत्रुता की शक्ति से कहीं अधिक है। जब अब्राहम लिंकन अमेरिका के राष्ट्रपति थे तो वहां गृहयुद्ध छिड़ा था। एक बार लिंकन घायल सैनिकों से मिलने उनके खेमे में गए। पास में ही दुश्मन (विरोधियों) के सैनिकों का भी खेमा लगा हुआ था। लिंकन अपने को रोक न सके और वह उनके पास जा कर प्रेमपूर्वक बातें करने लगे। जब वे वापस आ रहे थे तो एक वृद्ध महिला ने लिंकन से कहा कि आप दुश्मनों से प्यार दिखा रहे थे जबकि आपको तो उन्हें खत्म करना है। लिंकन ने मुसकरा कर कहा कि मैं विरोधियों से मित्रवत् मिल कर उनकी दुश्मनी को खत्म ही तो कर रहा हूँ।

मित्रता के स्तम्भ – परिचय, प्रेम, समर्पण, विश्वास

मित्रता के चार स्तम्भ हैं परिचय, प्रेम, समर्पण और विश्वास। दो मित्रों के मध्य एक-दूसरे का सम्पूर्ण परिचय होना चाहिए। यदि नाम, देश (धाम), काल (उम्र व अब तक का संक्षिप्त जीवन परिचय) व कर्त्तव्य (रोज़गार) आदि में कुछ छिपाया गया है, तो भविष्य में तथ्य उजागर होने पर मित्रता में खटास आ सकती है। आपस में प्रेम का होना अनिवार्य है, जो कि त्याग की भावना से बढ़ता है। निःस्वार्थ प्रेम से आपसी विश्वास बढ़ता है और दोनों मित्रों का अहंकार अर्पित-समर्पित हो जाता है। एक-दूसरे के लिए कुछ भी कर गुज़रने के लिए तैयार रहना समर्पण है। आपसी विश्वास हो तो कैसे भी मायावी तूफान मित्रता को डिगा नहीं सकते हैं। इस प्रकार मित्रता रूपी इमारत की नींव है प्रेम, दीवारें हैं परिचय, मजबूती है समर्पण और खूबसूरती है विश्वास।

दूध और पानी में मित्रता हो गई। दूध बोला, हे पानी, तू महान है। जब से तू यहां आया है, हमारा स्तर बढ़ कर आधी बाल्टी पार कर गया है। पानी बोला, दूध भैया, तू महान है। जब से तेरा संग मिला है, मेरी कीमत भी तेरे बराबर हो गई है। कभी तेरे पर संकट आया तो जान दे कर बचाऊंगा। ग्वाले ने दूध हलवाई की दूकान पर पहुंचा दिया। हलवाई ने दूध को पकाया तो दूध को जलने व उबल कर गिरने से बचाने की खातिर पानी भाप बन कर उड़ने लगा। कुछ समय बाद जब दूध अपने मित्र पानी को ढूँढ़ने के लिए बर्तन से बाहर जाने लगा, तो हलवाई ने खुद ही थोड़ा पानी डाल कर उनका पुनर्मिलन करा दिया। दूध व पानी के प्रेम व समर्पण की तरह ही सच्चे मित्र एक-दूसरे के प्रति न्यौछावर रहते हैं।

सभी को मित्रवत् निहारें

बिना विचारे किसी से मित्रता कर लेना जीवन की सबसे बड़ी भूल हो सकती है। आलसी, कामचोर, चुगलखोर, उधार मांगने के आदती व चाय के भूखे से दुआ-सलाम रखना ठीक है परन्तु मित्रता करना ठीक नहीं। कहा जाता है कि बुद्धिमान शत्रु से बेवकूफ मित्र ज्यादा हानिकारक है। देखा जाए तो यदि शत्रु बुद्धिमान है, तो उससे शत्रुता रखना बेवकूफी है और यदि मित्र बेवकूफ है तो उससे किनारा करना बुद्धिमानी है। श्रेष्ठ स्थिति तो यह है कि दुनिया हमें जो चाहे माने परन्तु हम सभी को समभाव, तटस्थ भाव, भ्रातृत्व भाव व साक्षी भाव से ईश्वरीय रचना समझ कर प्रेम करें, उन्हें मित्रवत् निहारें। दृष्टि की ऐसी विशालता ही महानता लाती है।

आज के मनुष्य की दृष्टि दूसरे के 99 गुणों को न देख उसके एक अवगुण पर ठहर जाती है। चील भी नीचे खिले सैकड़ों गुलाब के फूलों को न देख, बीच में पड़े मरे हुए चूहे को देख लेती है और उठा ले जाती है। यदि कोई 99 बार मददगार बना हो और किसी वजह से एक बार मना कर देता है, तो अगला उसकी 99 बार की मदद भूल, इस एक बात की गांठ मन में बांध कर द्वेष रखने लगता है जो कि गलत है। **(क्रमशः)**

मानव जीवन रूपी धारावाहिक

❊ ब्रह्माकुमारी उर्मिला, संयुक्त संपादिका

संसार की वर्तमान परिस्थितियों में मानव मन काफी हलचल और प्रश्नों से भरा हुआ है। कभी तो ये प्रश्न अपने बारे में उठते हैं कि मैं ऐसा क्यों नहीं कर सका या मुझे ऐसा करना चाहिए था या मेरे साथ ऐसा क्यों हुआ और कई बार ये प्रश्न दूसरों के बारे में उठते हैं कि उसने ऐसा क्यों किया, वो ऐसा क्यों करता है, उसे ऐसा नहीं करना चाहिए आदि-आदि।

नहीं बढ़ पाता इंच भर भी आगे

उपरोक्त क्या, क्यों, कैसे के ये प्रश्न निरन्तर मन को मथते रहते हैं, हलचल पैदा करते हैं और एक उलझा हुआ-सा जाल बनकर मन की शान्ति, स्थिरता, एकाग्रता पर हावी हुए रहते हैं। जैसे कीचड़ में पाँव फंस जाने पर व्यक्ति उससे बाहर निकलने के प्रयास में हिलडुल तो खूब करता दिखाई देता है परन्तु इंच भर भी आगे नहीं बढ़ पाता। इसी प्रकार क्यों, क्या के प्रश्नों में उलझा मानव खूब सोच विचार करता तो नज़र आता है पर सार्थकता, सफलता, सन्तुष्टता की डगर की ओर इंच मात्र भी नहीं बढ़ पाता।

अपने प्रति उठाए गए प्रश्नों से अपना सुधार

जिन बातों तक हमारी पहुँच है वहाँ यदि हम क्यों का प्रश्न उठाते हैं तो आत्म अवलोकन करके अपना सुधार करते हैं। मान लीजिए, एक विद्यार्थी के परीक्षा में नम्बर कम आते हैं। वह अपने से सवाल पूछता है, नम्बर कम क्यों आए? इस प्रश्न के साथ उसका पूरा अध्ययन काल उसके सामने घूम जाता है और उससे जो चूक हुई वह सामने आती है, जिसे वह अगले अध्ययनकाल में मिटाने या बदलने का प्रयास करता है। किसी कारीगर की कोई कृति सही नहीं बनी तो वह अपने से सवाल पूछता है, क्यों ठीक नहीं बनी? फिर अपनी कृति के प्रारम्भ से अब तक के निर्माण का अवलोकन करता है और अपनी या परिस्थिति-जन्य भूलों को ध्यान में रखते हुए पुनर्निर्माण करता है तो कृति को सम्पूर्ण रूप दे पाता है। भावार्थ यही है कि जब हम अपने से क्यों का उत्तर मांगते हैं, अपने भीतर उतरकर उसका उत्तर खोजते हैं तो हमारा परिवर्तन और सुधार होता जाता है।

अपनी ऊर्जा, लक्ष्य की प्राप्ति में लगाएँ

लेकिन यही क्यों, क्या, कैसे के प्रश्न तब हमारी शान्ति को ग्रहण लगा देते हैं जब हम उन बातों, घटनाओं, व्यवहारों, परिस्थितियों के बारे में इन्हें उठाते हैं जहाँ तक हमारी पहुँच नहीं है। संसार इतना बड़ा है, इसमें कहाँ-कहाँ क्या-क्या हो रहा है, वो सब हमारे वश में नहीं है। करोड़ों लोगों के मनों में क्या-क्या चल रहा है, हमारी जानकारी में नहीं है और यह संसार तो चला आ रहा है। हमारे जन्म से पहले भी था, हमारे जाने के बाद भी रहेगा। कई ऐसे परिणाम हमारे सामने आते हैं जिनके कारण हमारे जन्म से पहले घट चुके थे और कई ऐसे कारण हमारे सामने बनते हैं जिनके परिणाम हमारे जाने के बाद आएंगे। जैसे भीड़ भरे रास्ते में दौड़ते-भागते लोगों के बीच व्यक्ति किसी को नहीं कह सकता कि तुम ऐसे क्यों चल रहे हो, उस समय उसका ध्यान इस बात पर होता है कि कोई कैसे भी चले पर मुझे अपने को बचा-बचा कर, बिना टकराए रास्ता पार करके कम समय में सुरक्षित रूप से गन्तव्य तक पहुँचना है। जीवन-यात्रा में भी हम यही लक्ष्य रखें कि कोई दूसरा जो भी कर रहा है, उसके कर्मों को देख क्यों-क्या के प्रश्न में उलझकर समय बरबाद करने के बजाय हम अपने लक्ष्य पर पहुँचने में अपनी ऊर्जा लगाएँ।

84 किश्तों वाला धारावाहिक

यह संसार एक धारावाहिक की तरह है जिसकी 84 किश्तें (मानव

आत्मा 84 भिन्न-भिन्न शरीर धारण कर पार्ट बजाती है) हैं। वर्तमान समय अन्तिम किश्त चल रही है। मानव आत्माओं रूपी कलाकारों में कुछ तो ऐसे हैं जो सभी किश्तों में अभिनय करते हैं और कुछ का अभिनय 83, 82, 81, 80.... इस प्रकार कम किश्तों तक भी रहता है। कुछ ऐसे कलाकार भी हैं जो केवल अन्तिम किश्त में ही मंच पर आते हैं, उन्हें अभिनय का बहुत ही कम समय मिलता है। सांसारिक नाटक छोटे होते हैं इसलिए मानव को याद रहते हैं परन्तु यह नाटक 5000 वर्षों का है, बहुत बड़ा है और मानव एक किश्त में अभिनय करके जब शरीर रूपी कपड़ा बदलके दूसरी किश्त में अभिनय करता है तो पिछली किश्त और उसमें अपने अभिनय को भूल जाता है इस कारण उसके मन में ईश्वर, न्याय, सच्चाई आदि के बारे में प्रश्न उठने लगते हैं।

एक उदाहरण

मान लीजिए, एक नाटक में एक लालची, निर्दयी, धनी व्यक्ति एक ईमानदार, सच्चे, दयालु, जनहितैषी व्यक्ति को, उस पर अचानक आए आर्थिक संकट के समय इस शर्त पर धन उधार देता है कि यदि समय पर न लौटाया गया तो वह उसकी आँखें निकाल लेगा।

हमने इस नाटक की केवल वही किश्त देखी जिसमें वह ईमानदार व्यक्ति समय पर धन नहीं लौटा सका और वह निर्दयी धनी उसकी आँखें निकालने पहुँच गया। अनेकों के समझाने पर भी और कई गुणा धन की पेशकश किए जाने पर भी वह नहीं माना और पैने हथियार लेकर उसकी ओर बढ़ चला। इसके बाद किश्त खत्म हो गई। अब हमारे मन में क्या प्रश्न उठेंगे कि देखो आज के समय में ईमानदार कष्ट भोगते हैं, भगवान भी उनकी मदद नहीं करते और निर्दयी धनी व्यक्ति की गलत भावना भी पूरी हो रही है। संसार में न्याय है ही नहीं। परन्तु नाटक अभी पूरा तो नहीं हुआ। आगे की किश्तें बाकी हैं। अगली किश्त में एक व्यक्ति अचानक आता है और निर्दयी को कहता है, आँखें भले निकाल पर खून की एक बूँद भी नहीं गिरनी चाहिए क्योंकि करार केवल आँखें निकालने का था, खून गिराने का नहीं। खून गिरा तो तुम्हारी गर्दन उड़ा दी जाएगी। अब वह निर्दयी पीछे हटता है परन्तु सब लोग उसे कहते हैं, पीछे हटेगा तो भी भारी जुर्माना देना पड़ेगा, माफी मांगनी पड़ेगी। उसके पास जान बचाने के लिए और कोई चारा नहीं बचता अत: वह जुर्माना भी देता है और माफी भी मांगता है। इस प्रकार दया की जीत होती है और क्रूरता हारती है। परन्तु यह किश्त तो हमने देखी नहीं इसलिए हमारे मन में तो यही धारणा बन गई कि दयालु कष्ट भोगते हैं और निर्दयी अत्याचार करते हैं और भगवान भी हस्तक्षेप नहीं करते।

संसार नाटक को साक्षी होकर देखें

जीवन रूपी नाटक भी ऐसा ही है। यदि कोई जन्म से विकलांग है, अनाथ है, अभावग्रस्त है तो हमारे मुख से एकदम निकलता है, भगवान ने यह क्या किया, भगवान को दया नहीं आई? परन्तु इस कलाकार की पूर्व भूमिका का ज्ञान हमें नहीं है और अगली भूमिका को हम देख पाएँगे या नहीं, कुछ निश्चित नहीं है। कहावत है, 'सदा न होवत एक समान' अर्थात् परिवर्तन संसार का नियम है। इसलिए आज संसार में जिसे हम सुखी समझते हैं, उसकी भी पूर्व भूमिका रही है और आगे भी है। जिसे दुखी समझते हैं, उसकी भी पूर्व भूमिका रही है और आगे भी है। इन भूमिकाओं को जाने बिना हम अपने मन को दुखी, सुखी करें या किसी पर दोषारोपण करें, यह तो अपनी ही संकल्प शक्ति को नष्ट करने वाली बात है। अत: संसार नाटक में घट रही हर घटना को साक्षी हो देखते हुए क्यों, क्या के प्रश्नों को विराम देकर अपनी संकल्प शक्ति को बचाएँ, मन को सुकून में रखें।

संसार नाटक के आदि, मध्य, अन्त की सम्पूर्ण कहानी (84 किश्तों की कहानी) जानने के लिए प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के नज़दीकी केन्द्र पर जाकर सात दिन का कोर्स करें तो सब प्रश्नों के उत्तर मिल जाएंगे, मन सुमन बन जाएगा और जीवन में अमन-चैन आ जाएगा। ❖

दीवाली के पीछे छिपे हुए रहस्य

दीवाली के जो अन्य नाम 'दीपावली' या 'दीपमाला' इत्यादि हैं, उन सभी से सिद्ध होता है कि दीवाली मुख्य रूप से जगे हुए दीपकों का त्योहार है। इस दिन घर के कोने-कोने में दीपक जगाकर उजाला करने की प्रथा चिरकाल से चली आ रही है। इस त्योहार से पहले ही लोग घरों की खूब सफाई भी करते हैं और उत्सव के दिन स्वयं साफ-सुथरे होकर, नए वस्त्र पहन कर स्वास्तिक और श्री लक्ष्मी का पूजन और आह्वान करते हैं। अपना मुख भी मीठा करते और पड़ोसियों और स्वजनों को भी मिठाइयों की भेंट देकर उन्हें 'दीवाली मुबारक' कहते हैं। इसके अतिरिक्त, पुराने हिसाब-किताब को समेटकर नया लेखा प्रारम्भ करने की प्रथा भी इस त्योहार से जुड़ी हुई है। इस दिन नये बर्तन, मिट्टी के हाथी-घोड़े और चीनी के बने हुए मीठे महल इत्यादि खरीदने का रिवाज़ भी चला आता है। ये सभी बातें तो समस्त भारतवासियों को भली-भाँति विदित हैं परन्तु सोचने की बात यह है कि इन सभी प्रथाओं और परम्पराओं का आपस में भी कोई सम्बन्ध है या नहीं? दूसरी बात यह है कि इस त्योहार को श्री लक्ष्मी से सम्बन्धित कोई नाम न देकर 'दीपमाला' या 'दीपावली' इत्यादि संज्ञाएँ ही क्यों दी गई हैं? तीसरा एक प्रश्न यह भी है कि श्री लक्ष्मी के शुभागमन की आशा को दीपकों की रोशनी से और घर की सफाई आदि से क्यों जोड़ा गया है और क्या इन दीपकों को जगाने से श्री लक्ष्मी के पदार्पण की शुभाकांक्षा पूरी हो भी सकती है या नहीं? इस प्रकार दीवाली के पीछे छिपे हुए ये जो मधुर रहस्य हैं, इन्हें जाने बिना विचारवान व्यक्ति के लिए दीवाली का त्योहार फीका और निस्सार ही है।

दीपक कब-कब और क्यों जगाए जाते हैं?

श्री लक्ष्मी के शुभागमन के साथ दीपकों का सम्बन्ध जोड़ने का जो कारण है, उसको स्पष्ट करने से पहले हम यह विचार कर लेते हैं कि संसार में प्राय: किन विशेष अवसरों पर दीपकों अथवा अन्य साधनों से रोशनी करने की रस्म चली आती है। आप देखेंगे कि मुख्य रूप से निम्नलिखित पाँच उद्देश्यों से दीपकों को रोशन करने का रिवाज़ है –

1.रास्ता दिखाने के लिए – आजकल इसके लिए दीपकों की बजाय बिजली

के साधनों का प्रयोग किया जाता है। पहले चौरास्तों पर एक ऐसा चौमुखी स्थान बनाकर दीये जगा दिए जाते थे जहाँ वे वायु के तेज झोंकों से सुरक्षित रहें। दीपकों का प्रयोग इस लोक के शरीरी यात्रियों के रास्ते को रोशन करने के लिए ही नहीं किया जाता बल्कि किसी के देह-त्याग के उपरान्त भी दीपक जगाने की प्रथा इस भावना से चली आ रही है कि मृतक का मार्ग प्रकाशित हो जाये और वह अपने पथ से भटक न जाये। समुद्र में भी जहाजों को रास्ता दिखाने के लिए लाइट हाउस (रोशनी के मीनार) बने होते हैं।

2.वस्तुओं का ठीक ज्ञान प्राप्त करने के लिए – हम जानते हैं कि जब प्रकाश होता है तो जो चीज़ जैसी हो

वैसी ही देखने में आती है इसलिए अंधेरे के समय दीपक या बिजली द्वारा प्रकाश किया जाता है।

3.चोरों, डाकुओं तथा जंगली जानवरों से बचने के लिए।

4.खुशियाँ मनाने के लिए – जीत की खुशी में या स्वतन्त्रता-प्राप्ति की खुशी में भी देश की सरकार और लोग खूब रोशनी करते हैं।

5.देवी-देवताओं का आह्वान करने के लिए।

पूजा चाहे दिन की रोशनी में की जाये, चाहे रात्रि के अन्धेरे में लेकिन पूजा के समय दीपक अवश्य जगाए जाते हैं। लोगों की यह दृढ़ मान्यता है कि पूजा-गृह में यदि अन्धेरा होगा तो देवी या देवता का शुभागमन नहीं होगा। इसी आस्था से नवरात्रि के दिनों में शक्तियों के पुजारी भी सारी रात दीपक जगा कर रखते हैं। आरती करते समय भी लोग दीपक अवश्य जगाते हैं।

दीवाली के अवसर पर या वैसे भी जब कभी भक्त लोग दीपक जगाते हैं तो उसकी ज्योति के आगे अपना मस्तक झुका कर नमस्कार करते हैं और उनके मुख से सहसा 'जय' शब्द निकलता है। सोचने की बात है कि दीपक जगाने वाले चैतन्य मनुष्य का दर्जा तो जड़ दीपक से उच्च माना जाना चाहिए तब फिर मनुष्य दीपक के आगे नतमस्तक क्यों होता है और जय-घोष क्यों करता है? इसका उत्तर यह है कि दीपक की लौ, 'जगी हुई' ऐसी मनुष्यात्मा की प्रतीक है जिसने काम-क्रोधादि पाँच विकारों पर 'जय' प्राप्त की है और जो पूज्य है। आज की मनुष्यात्मा की ज्ञान-ज्योति तो बुझी हुई है, वह तो अज्ञानान्धकार में है और विकारों से पराजित है तथा पुजारी-स्थिति में है। बस, इस रहस्य को समझना ही दीवाली के दीपकों के सच्चे अर्थ को जानना है।

दीपक जगाने का भावार्थ

भारत में यह प्रथा चली आई है कि घर का हर एक व्यक्ति अपने हाथों से कम-से-कम एक दीपक अवश्य जगाता है। यह रस्म इस बात का परिचय देती है कि हर एक मनुष्यात्मा की ज्योति जगी हुई हो और सृष्टि रूपी वृहद् घर के कोने-कोने से अज्ञानान्धकार और तमोगुण मिटा दिया जाए तब सृष्टि में श्री लक्ष्मी का शुभागमन होता है। दीवाली के अवसर पर सफाई मनुष्यात्मा की पवित्रता की सूचक है और नए वस्त्र, नए सतोगुणी शरीरों के सूचक हैं। पुराने हिसाब-किताब को बन्द करके नए हिसाब को खोलना, पुराने विकर्मों के लेखे को नाश करके आगे के लिए नया सतोगुणी जीवन बनाने का द्योतक है। जब सारी सृष्टि पर अमावस्या की रात्रि-जैसा अज्ञानान्धकार छाया होता है तो सदा जागती ज्योत परमपिता परमात्मा 'ज्योतिर्लिंगम् शिव' इस सृष्टि में अवतरित होकर उपरोक्त विधि सिखाते हैं, सारी पतित सृष्टि को पावन करते हैं और मनुष्यात्माओं को विकारों पर 'विजय' प्राप्त कराते हैं। इसी कारण ही दीवाली का त्योहार अमावस्या की रात में मनाया जाता है। यह त्योहार हर वर्ष 'विजय दशमी' के बाद ही आता है। विजय दशमी का अर्थ है, मनुष्य माया (विकारों) के शासन से स्वतन्त्र हो गया है। अत: दीवाली पर जो दीपक जगाये जाते हैं, उनके पीछे पाँचों ही रहस्य छिपे हैं। वे 'ज्ञान-प्रकाश' द्वारा 1.आत्मा और परमात्मा के परिचय के 2.जीवन के सन्मार्ग-दर्शन के 3.काम-क्रोधादि चोरों की घुस-पैठ से सुरक्षित रहने के 4.श्री लक्ष्मी देवी के शुभागमन के और 5.आत्मिक आनन्द तथा राज्य-भाग्य की खुशी के प्रतीक हैं।

दीवाली मनाने का वास्तविक तरीका

उपर्युक्त से भली-भाँति ज्ञात हो गया है कि महत्व मिट्टी के दीपकों का नहीं है बल्कि आत्मा रूपी दीपकों का है। मिट्टी के दीपकों से सन्मार्ग और कुमार्ग का भेद पता नहीं लगता। जब तक यह सृष्टि काम-क्रोधादि आसुरी सम्पत्ति के कारण अपवित्र है तब तक चाहे हम करोड़ों दीपक जगा दें, श्री लक्ष्मी का आगमन नहीं हो सकता, कारण कि देवी-देवता अपवित्र धरती

पर अपने पाँव नहीं धरते। जब मनुष्यात्मा स्वयं जाग जाती है और मायाजीत बन जाती है तो नर-नारी पुजारी नहीं रहते बल्कि स्वयं ही श्री नारायण अथवा श्री लक्ष्मी का पद प्राप्त कर लेते हैं। मिट्टी का दीपक तो रात को जलाते हैं और वह प्रात: तक बुझ जाता है। श्री लक्ष्मी के आह्वान के उद्देश्य से स्थूल जागरण करने वाले भी प्रात: को वैसे-के-वैसे ही अपने को पाते हैं लेकिन आत्मा को जब हम एकरस जग रहे दीपक की भाँति जगा लेते हैं तो पुराने कर्मों का लेखा समेटकर तथा नया शरीर रूपी वस्त्र धारण करके वैकुण्ठ में श्री लक्ष्मी, श्री नारायण के राज्य में सदा खुश, सदा स्वस्थ और सदा सुखी हो जाते हैं। वास्तव में वही दीवाली 'मुबारक दीवाली' है।

कैसे कहें 'मुबारक दीवाली'

आज की दीवाली को भला हम 'मुबारक दीवाली' कैसे कह सकते हैं जबकि हमारे पास वह अखुट धन नहीं, हमारा शरीर रूपी वस्त्र नया और सतोगुणी नहीं, जब हमारा आत्मा रूपी दीपक जगा नहीं, हमारे मन से अमावस्या की रात्रि जैसा अंधकार मिटा नहीं और हमारे चित्त में स्थाई खुशी नहीं? आज तो नर 'दरिद्र नारायण' और नारियाँ 'कुलक्ष्मी' बन गई हैं क्योंकि आत्माओं ने विकारों पर विजय प्राप्त नहीं की। आज हम चीनी के मीठे महल, मिट्टी के हाथी-घोड़े अथवा नये बर्तन लेकर भले ही कुछ क्षण के लिए स्वयं को खुश कर लें परन्तु आज वे सोने के रत्न-जड़ित, मनमोहक महल, सोने-चाँदी के बर्तन, सुन्दर और सुसज्जित हाथी और गजराज, अन्न के भरे भण्डार और श्री नारायण तथा श्री लक्ष्मी का सच्चा स्वराज्य और उसकी सहचरी सुख-सुविधा कहाँ, जो सच्ची खुशियाँ देने वाले हैं?

आज मनुष्य मिट्टी के दीपक जगाकर आरती करते हुए कहते हैं कि हमारा तन, मन और धन प्रभु के अर्पण है परन्तु यदि देखा जाए तो वास्तव में है सब कुछ माया के अर्पण क्योंकि मनुष्य सारा दिन तन द्वारा विषय-विकार भोगता है, मन द्वारा अशुद्ध संकल्प करता रहता है और धन का भी व्यर्थ कार्यों में अपव्यय करता है। ऐसी आरती भला ईश्वर को कैसे स्वीकार हो सकती है? आज दीवाली के दिन मनुष्य स्वास्तिक की पूजा तो करते हैं परन्तु 'स्वास्तिक', सृष्टि के आदि, मध्य, अन्त के जिस ज्ञान का सूचक है, उससे वे बिल्कुल ही अनभिज्ञ हैं।

अत: अब आवश्यकता इस बात की है कि हम आत्मा रूपी दीपक जगाएँ, स्वास्तिक अथवा सृष्टि के ज्ञान को समझें, यह जो अज्ञान-रात्रि चल रही है, इसमें हम सजग रहें और मन-मन्दिर में पवित्रता स्थापित करें तो इस धरा पर निश्चित रूप से उजाला होगा और श्री लक्ष्मी-श्री नारायण के सुखद स्वराज्य का आरम्भ हो जाएगा और हमारे क्लेष और कल्मष मिट जाने से सदा के लिए हमें हर्ष और विजयश्री का सुख होगा। वह जो दीवाली होगी, वह 'दीवाली मुबारक' होगी क्योंकि उसमें न रोग होगा, न शोक, न अशान्ति होगी, न अस्वच्छता, न दरिद्रता होगी, न दुख होगा। ये मंगल वचन हमें सभी को कहने चाहिएँ। अगर एक दिन उजाला रखने से तथा जागने से श्री लक्ष्मी जी घर में पधारती हैं तो क्यों न हम अपने मन में सदा ज्ञान का उजाला रखें और मन को ईश्वरीय स्मृति में जगाए रखें ताकि श्री लक्ष्मी केवल क्षण भर के लिए नहीं बल्कि स्थायी रूप से इस धरा पर पधारें। ❖

जो हुआ अच्छा हुआ

* ब्रह्माकुमार जगन भाई, पाटोली, जयपुर

सन् 1993 में मेरी शादी हुई। पत्नी मेरे साथ 5 वर्ष तक पाटोली गाँव में स्नेहपूर्वक रही, बाद में कहने लगी, गाँव में नहीं रहना चाहती हूँ, आप अपना तबादला कोटा करवा लो। मैंने कहा, मैं अपनी खेती और नौकरी छोड़कर कोटा नहीं जा सकता हूँ। वे बोली, पारिवारिक न्यायालय में जाकर आप पर दहेज प्रथा का केस कर दूँगी जिससे मुझे आधा वेतन घर बैठे मिल जायेगा। इसके बाद वे अपने मायके कोटा चली गई। मैं 4-5 बार कोटा लेने गया तो पाटोली आने से इनकार कर दिया, मैं बड़ा चिन्तित रहने लगा।

चिन्ता चिन्तन में बदल गई

उसी दौरान एक ब्रह्माकुमार अध्यापक का तबादला मेरे विद्यालय में हो गया। उन्होंने विश्राम के समय सारे स्टाफ को परमात्मा का परिचय कराया। उसी समय मुझे ईश्वरीय ज्ञान मिला और चिन्ता चिन्तन में बदल गई। मैंने प्रतिदिन भगवान के महावाक्य सुनना और राजयोग का अभ्यास करना शुरू कर दिया। सारा बोझ बाबा को देकर हलका हो गया। पत्नी ने कोटा में रहते 21 मार्च, 2002 को पारिवारिक न्यायालय में मेरे खिलाफ दहेज धारा 125 में मामला दर्ज करा दिया। एक दिन अचानक मेरे विद्यालय में दो सिपाही सिविल ड्रेस में पहुँचे। मैंने उनसे बातचीत की। उन्होंने कहा, धारा 125 के तहत आपको लेने के लिये आये हैं, आपको कोटा चलना है। विद्यालय की छुट्टी होने वाली थी। हम तीनों घर पहुँचे। हमने चाय पी। मुझे कोई डर नहीं लग रहा था, विश्वास था कि भगवान मेरे साथ हैं। मैंने उन्हों को भी परमात्मा का परिचय कराया। वे बड़े खुश हुए और बोले, आप तो परमात्मा के बहुत बड़े भक्त हो।

थाने में भी चली क्लास

शुक्रवार का दिन था। मुझे कोटा महिला थाने में ले जाया गया और वहाँ इन्चार्ज को बताया गया कि ये मुजरिम परमात्मा के बहुत बड़े भक्त हैं, इनसे आप प्रवचन सुनो। मुझे बन्दी न बनाकर थाने में ही देखरेख में तीन दिन रखा गया। इन तीनों ही दिन शाम को सब-इनस्पेक्टर व सिपाहियों ने थाने में मुझसे ईश्वरीय ज्ञान तथा राजयोग का कोर्स किया।

तब हुआ भगवान के साथ का अनुभव

चौथे दिन तक मेरी दवाई, भोजन समाप्त हो चुके थे। मैं मन ही मन दिल के प्रश्न बाबा से पूछ रहा था कि अब क्या करना है बाबा। उसी बीच एक 'शिव सन्देश' मैंने कोर्ट के बाबू को दिया था। उन्होंने पढ़कर मैजिस्ट्रेट साहब को दे दिया था। वे पढ़कर बहुत खुश हुए थे। जैसे ही मुझे पेश किया गया, मैजिस्ट्रेट साहब ने जमानत स्वीकार कर ली तब हुआ मुझे भगवान के साथ का अनुभव।

कई वर्षों तक तारीखों पर गया। अन्तिम फैसले पर न्यायाधीश महोदय ने पूछा, तुम अपनी पत्नी को क्यों नहीं साथ ले जाते हो? मैंने कहा, पाटोली गांव में जाने से इनकार करती है। तब न्यायाधीश महोदय ने उनसे पूछा, आप अपनी ससुराल क्यों नहीं जाती हो? वे बोली, मुझे गांव में रहना पसन्द नहीं है, गांव में मेरा मन नहीं लगता है। इसके बाद न्यायाधीश महोदय ने मेरे पक्ष में फैसला सुनाकर मुझे धारा 125 से मुक्त कर दिया। अब मैं निश्चय बुद्धि बनकर अथक सेवा करता हूँ।

परिस्थितियों में पथ से विचलित न होना, यही वीर पुरुष का लक्षण है

जब बाबा ने ड्राइवर की बुद्धि को टच किया

❊ ब्रह्माकुमारी स्वाति, ठाणा, पश्चिम (महाराष्ट्र)

जीवन की एक सत्य घटना का वर्णन कर रही हूँ। मीठे-प्यारे शिवबाबा ने हमें अपनी पलकों में छिपाकर सुरक्षित रखा है। शिवबाबा सर्व संबंधों से साथ निभाते हैं, यह विश्वास जीवन को निश्चिन्त बनाता है। ऐसा ही एक संबंध, जो हम कभी सोच भी नहीं सकते, बाबा ने निभाया। इस अनुभव को याद करके प्यार से आँखें भर आती हैं।

सर्व सम्बन्धों से याद किया बाबा को

लगभग 25 साल पुरानी बात है, मैं ईश्वरीय ज्ञान में आई ही थी। रोज़ की तरह घर का कामकाज पूरा करके ठाणा स्टेशन तक पहुँची। मेरा कार्यालय घाटकोपर में था। ठाणा से मुम्बई के लिए 10 बजकर, 4 मिनट पर चलने वाली फास्ट ट्रेन हमेशा की तरह प्लेटफार्म क्र.तीन पर खड़ी थी। मैंने ट्रेन में चढ़कर सर्व संबंधों से शिवबाबा को याद करने का अभ्यास चालू कर दिया। अचानक संकल्प आया कि आज शिवबाबा हमारी ट्रेन के ड्राइवर हैं। यह संकल्प किया नहीं, स्वत: मन में आया। माता, पिता, बंधु, सखा, साजन, बच्चा, सतगुरु इन मीठे संबंधों से हम हमेशा याद करते हैं। मन में विचार आया, बाबा ने इस संबंध के लिए कभी कहा नहीं, फिर हम यह क्या सोच रहे हैं।

नया और विचित्र सम्बन्ध

वो परमपवित्र, पतितपावन, सद्गतिदाता, भोलानाथ, प्यार, सुख, शान्ति, पवित्रता, आनन्द का सागर सर्वशक्तिवान बाबा हैं और हमारे मन में उनके लिये ये क्या विचार चल रहे हैं। खुद पर शरम आने लगी। मैंने अपने गाल पर थप्पड़ लगाया और बाबा को कहा, सॉरी बाबा, लेकिन फिर वही संकल्प, आज शिवबाबा हमारी ट्रेन के ड्राइवर हैं। इस संकल्प को दूर हटाने के लिए अव्यक्त वाणी पढ़ना शुरू किया।

ट्रेन अपने समय पर चालू हो गयी। ट्रेन लेट नहीं तो लेटमार्क भी नहीं होंगे। आज कुछ खास बात लगने लगी। ट्रेन आरामदायक स्थिति में पर तेज गति से चल रही थी। सुंदर हवा मन को प्रसन्न करने लगी। फिर से संकल्प आया, आज बाबा हमारी ट्रेन के ड्राइवर हैं। अब तो हैरान हो गई कि यह क्या हो रहा है मुझे।

ग्रीन सिग्नल में रुक गई गाड़ी

अचानक ट्रेन रुक गई, वो भी हलके से। बाहर झाँक कर देखा तो ग्रीन सिग्नल था। फिर ट्रेन कैसे रुकी, मन में प्रश्न उठा। तभी पुन: संकल्प आया, आज बाबा हमारी ट्रेन के ड्राइवर हैं। फिर से अव्यक्त वाणी पढ़ना शुरू किया। सभी माताएँ-बहनें चिल्लाने लगी, ट्रेन से उतरने लगीं और मैं शान्त खड़ी रही। थोड़ी देर बाद ट्रेन का ड्राइवर आकर सभी को कहने लगा, ट्रेन आगे नहीं जायेगी, सभी नीचे उतर जाओ। अब तो उतरना ही था। हमने उनसे पूछा, भाई जी, क्या हुआ, जो ग्रीन सिग्नल होने पर भी गाड़ी रुक गई। ड्राइवर ने बताया, 'इंजन से दो फुट दूरी पर रेलवे लाइन दो टुकड़े होकर टूट गयी है। पता नहीं, मुझे कोई प्रेरित कर रहा था, गाड़ी रोक दो, गाड़ी रोक दो। एक तो ग्रीन सिग्नल, दूसरा फास्ट ट्रेन, कैसे रोकूँ? फिर भी रोक लिया और आज हज़ारों जानें बच गईं। नहीं तो ट्रेन पटरी से उतर जाती और हम पर भी बड़े हादसे का इल्जाम लग जाता, शुक्र है भगवान का, उसने कैसे बचा लिया। यह कैसे बुद्धि दी हमको ट्रेन रोकने की।' सारी भीड़ बड़े ही अचरज से देख रही थी उस टूटी हुई रेलवे लाइन को।

(शेष.. पृष्ठ 31 पर)

प्रभु से सर्व सम्बन्धों की प्राप्ति का अनुभव

* ब्रह्माकुमारी पूनम, जयपुर (म्यूज़ियम)

एक कल्प के 84 जन्मों में 84 माता-पिता और अन्य सम्बन्धी प्राप्त होते हैं। इनके साथ केवल हमारा कर्मजन्य सम्बन्ध होता है। ये सम्बन्धी हर जन्म में बदलते रहते हैं। कल्प के इस अन्तिम जन्म में सर्व सम्बन्धों के रूप में हमें भगवान मिलते हैं जिससे हम भाग्यवान बन जाते हैं। परमात्मा शिव हमारे मात-पिता भी हैं, दोस्त, भाई, शिक्षक, साजन.... भी हैं। उनके साथ हर सम्बन्ध से हमें अनेक प्रकार की अलौकिक प्राप्तियाँ होती हैं। भिन्न-भिन्न सम्बन्धों से क्या-क्या प्राप्तियाँ होती हैं उन्हें इस लेख द्वारा हम जानेंगे –

माता-पिता – शिवबाबा हमारे माता-पिता हैं। शिवबाबा ने ब्रह्मामुख द्वारा हम बच्चों को अडाप्ट कर अपना बनाया है। परमात्म प्यार की पालना का भाग्य हमें प्राप्त हुआ है। दुनिया में तो लोग गाते हैं कि तू प्यार का सागर है, तेरी एक बूंद के प्यासे हम... लेकिन स्वयं भगवान हम पर अपने प्यार की बरसात कर हमें भी आप समान मास्टर प्यार का सागर, अति मीठा बना रहे हैं। बाबा ने अपने प्यार, शक्तियों, गुणों की सम्पत्ति का हमें वारिस बनाकर हमारा भाग्य जगा दिया है। वो स्वयं हमारे केयरटेकर बने हैं। बिना कहे सही समय पर, सही मदद पहुंचा देते हैं। कभी भी मांगने की दरकार ही नहीं पड़ती। जैसे शारीरिक पिता अपने बच्चों को अपनी जायदाद देते हैं, ऐसे ही स्वर्ग के रचयिता पिता हम बच्चों को स्वर्ग का वर्सा दे रहे हैं। जो स्वयं सुख के सागर हैं, वो सुख की दुनिया की रचना कर उसका मालिक हम बच्चों को बना रहे हैं जहाँ हम 21 जन्मों तक सदा सुखी और सम्पन्न बन जाएंगे, जहाँ प्रवृत्ति भी सतोप्रधान, मानवात्माएं भी सतोप्रधान अर्थात् देवी-देवताएं होंगी। लौकिक मां-बाप सदैव अपने बच्चों को सुख देने की कोशिश करते हैं परन्तु परिस्थितिवश कभी दुख भी दे देते हैं। परन्तु शिवबाबा हैं ही दुखहर्ता-सुखकर्ता। वे हमें भी अपने समान मास्टर सुखदाता, सुखदेव बना देते हैं।

ईश्वरीय जन्म और जीवन का आधार पवित्रता है। हद के मां-बाप तो विकारों से जन्म देकर विकारी जीवन का ही रास्ता बताते हैं लेकिन शिवबाबा पवित्रता से नया जन्म दे, पवित्र जीवन जीने और दूसरों को भी पवित्र बनाने का मार्ग हमें बताते हैं। ईश्वर मात-पिता हमें इस संसार के लिए पवित्रता के फरिश्ते, शान्ति-सुख बांटने वाले देवदूत बना देते हैं। हमें नष्टोमोहा बनाए, काल पर जीत पहनाकर, अकाले मृत्यु से मुक्त सतयुग में ले जाते हैं।

खुदा दोस्त – जीवन में सबको किसी न किसी मित्र की आवश्यकता अवश्य होती है। कठिन समय में मदद की आशा व्यक्ति अपने मित्रों से ही रखते हैं। संगमयुग में हम ब्रह्मावत्सों को स्वयं खुदा दोस्त के रूप में मिले हैं। खुदा इतने प्यारे और सच्चे दोस्त हैं जो हर कदम पर मदद करने को तैयार रहते हैं। बाबा कहते हैं, जब भी ज़रूरत हो, दिल से कहो 'मेरा बाबा' तो मैं सदैव तुम्हारी मदद को तैयार ही खड़ा हूँ। दुनियावी दोस्त तो आज वायदा कर कल फिर धोखा भी दे देते हैं परन्तु खुदा दोस्त ऐसे हैं जो प्रतिज्ञा कर फिर पूरी आन-शान से निभाकर हमें भी महान बना देते हैं। उन्होंने प्रतिज्ञा की है कि 'मुझे अपना मददगार बनाके तो देख, तुझे सबकी गुलामी से ना छुड़ा दूं तो कहना।'

लौकिक दोस्त मदद कर भी देंगे तो हर घड़ी मदद का एहसान जताते रहेंगे। अपनी मदद का वर्णन कर-कर के हमें दबाने या अपने प्रभाव में लाकर कुछ भी करने को मजबूर करते रहेंगे लेकिन खुदा दोस्त ऐसे हैं

जो मदद पाने वालों को आज़ाद करके बेफिकर बादशाह बना देते हैं। कहां हम धूल में पड़े थे परन्तु अपनी शक्ति और अपने साथ से हिम्मत दिलाकर खुदा दोस्त ने आकाश की बुलंदियों पर पहुंचा दिया। ऐसे प्यारे, सच्चे, दिलवाले खुदा दोस्त को यह दिल लाखों-लाखों शुक्रिया करता है। स्वयं खुदा दोस्त आकर जीवन की नैया को चला रहे हैं। खुदा ही साथी बन गए तो ना दुनिया कुछ कर सकती है, ना माया। 'जिसका साथी है भगवान, उसको क्या रोकेगा आंधी और तूफान।' ऐसी दोस्ती केवल खुदा ही निभा सकते हैं, जो अपनी शिक्षा से सारे सम्बन्धों की परिभाषा ही बदल देते हैं।

खुदा दोस्त, आपको दोस्त के रूप में पाकर मेरी किस्मत ही जाग उठी है, ज़िंदगी बदल गयी है। सुख की कलियां चहक उठी हैं। आपकी दोस्ती से मेरे जीवन का रूप बड़ा सुहावना बन गया है। मैंने कभी स्वप्न में भी नहीं सोचा था कि आप जैसा बहुत प्यारा दोस्त मुझे मिलेगा। आपके मिलने से ये ज़मीं-आसमां भी मेरे संग गुनगुनाने लगे हैं। आपने हर घड़ी में, जीवन की हर स्थिति, परिस्थिति में मेरा साथ निभाया है। हमेशा कठिन हालातों में, मुश्किलों में मुझे रास्ता दिखाया है। हर कदम पर, हर बार नई रोशनी देकर सफलता की ऊँचाइयों पर पहुंचाया है। सुख-दुख, हार-जीत में हमेशा ही मेरे साथ रहे हैं आप। ऐसे वफादार और समझदार दोस्त को पाकर मुझे खुद पर नाज़ होता है। मेरा भाग्य कितना अच्छा है, कितना रोशन है आपको पाकर।

भले ही आप साकार रूप में मेरे सामने हों या ना हों लेकिन आपकी मदद और मार्गदर्शन मुझे हर पल मिलता रहता है। आपके साथ के बलबूते पर ही तो मैंने जीवन में महानता को पाया है। आपने हर बार मेरी उम्मीद और मेरे सामर्थ्य से ज्यादा ही दिया है। मुझे नाज़ है आप पर कि मुझे ऐसा दोस्त मिला है जो किसी को चिराग लेकर ढूंढ़ने पर भी नहीं मिलता है। सच में इतना प्यार करेगा कौन और कहां मिलेगा ऐसा प्यार! आपने मुझे खुद जैसा बनाकर मेरी दुनिया ही रोशन कर दी है। धन्यवाद दोस्त! इतना प्यार और इतनी ईमानदारी से मेरा साथ निभाने के लिए।

परम शिक्षक – बाबा को परम शिक्षक के रूप में पाने का भी भाग्य है। बाबा हमें मनुष्य से देवता बनने की पढ़ाई पढ़ा रहे हैं। इतनी दूर, परमधाम से आकर बाबा रोज़ पढ़ाते हैं। ऐसे सर्वोच्च और सम्पूर्ण टीचर से पढ़ने का भाग्य भी हमें केवल अभी ही प्राप्त होता है। परम शिक्षक शिवबाबा की श्रीमत पर दैवी मैनर्स अपने में धारण कर हम देवता बन जाते हैं। गति-सद्गति दाता, ज्ञान सागर, जानी-जाननहार, परम शिक्षक शिवबाबा, शुक्रिया आपका। आपके अनमोल शिक्षाओं रूपी मोती मुझको आप समान गुणवान बना रहे हैं। आपने मर्यादाएँ देकर मेरे जीवन को सुरक्षित तो किया ही है साथ ही सम्पूर्ण समझ देकर त्रिकालदर्शी भी बनाया है। गॉडली स्टूडेन्ट लाइफ देकर मेरे जीवन को नई दिशा दी है। आपने जो मुझे समझ दी है, विवेक दिया है, दिव्य बुद्धि दी है, उस द्वारा मुझे हर पल सफलता ही प्राप्त हुई है। जीवन की परीक्षाओं में आप द्वारा मिली शिक्षाओं ने हर पल मेरा साथ दिया है।

मैं आपसे प्रतिज्ञा करती हूँ, 'हे मेरे परम शिक्षक, सदा आपकी शिक्षाओं पर चल, आप समान बन, सदा हाँ जी का पाठ पक्का कर, सम्पूर्ण नष्टोमोहा बन अन्तिम परीक्षा में फुल पास हो आपका नाम बाला करूंगी। सदा आपकी आज्ञाकारी बन, वफादारी से, सच्चाई से आपकी श्रीमत पर पूर्ण रीति से चलूंगी। सम्पूर्ण निश्चय बुद्धि हो, समर्पित बुद्धि से सेवा करूंगी। आपने जो कर्मों का ज्ञान दिया है उसे सम्पूर्ण रीति से धारण कर पुण्य का खाता जमा कर पास विद् ऑनर बनूंगी।'

भाई – प्यारे बाबा ने भाई के रूप में बैकबोन बनकर सदा साथ दिया है और मदद की है। जीवन को पवित्र

बनाकर रक्षाबंधन का सच्चा उपहार दिया है। प्यारे बाबा, आपसे कोई भी बात करने में झिझक नहीं लगती है बल्कि और ही हलकापन महसूस होता है। मन-बुद्धि के सारे बोझ लेकर आपने मुझे निश्चिंत बना दिया है। जब भी आपसे किसी बात का हल पूछती हूँ, आप सहज ही उत्तर दे देते हो। आपने हमेशा एक छोटे बच्चे की तरह मुझे प्यार दिया है और ध्यान रखा है। जब भी कभी थोड़ी उदास होती हूँ आप मेरे साथ खेलते हो, मेरे साथ बातचीत करके मेरा मूड ठीक कर देते हो। आपने मुझे हमेशा ही भरपूर रखा है। आपके साथ और आपकी मदद से मैं अपने अंदर एक स्फूर्ति, एक प्रेरणा और शक्ति महसूस करती हूँ। मुझे सदा यही लगता है कि भैया बैठे हैं, मैं क्यों सोचूं, आपे ही आप मुझे गाइड करोगे और सफलता की सीढ़ी चढ़ाकर मंज़िल पर पहुँचा दोगे। मुझे इस बात का गर्व होता है कि मेरा भैया वो है जिसे सारी दुनिया याद करती है।

साजन – प्राणप्रिय शिवबाबा, आपको साजन के रूप में पाकर मेरा जीवन धन्य-धन्य हो गया। मेरा रोम-रोम पुलकित हो गया। आपने मुझे अपने साथ से शिवशक्ति बना दिया है। सदा साथ निभाते हो आप मेरा। आपने जीवन सुख-शान्ति, सम्पत्ति, आनन्द से भरपूर किया है। आप की साथी बनकर मैं भाग्यवान बन गई हूँ। आपने मेरे आंसू पोंछकर मुझे खुद जैसा सुखदायी बनाया है। ज्ञान का कलश देकर सर्व की तपत बुझाने वाली, शीतलता का दान देने वाली शीतला देवी बनाया है। आपने जो कुछ भी मुझे दिया है उससे मुझे संतुष्टि है। यह मेरा सौभाग्य है कि मैं आपके काम आ रही हूँ। मैं तो कहाँ आपके काबिल थी लेकिन आपने मुझे लायक बना कर इतना प्यार किया है जो मैं धन्य-धन्य हो गई हूँ। घर बैठे ही बड़ी सहजता से आपका साथ मिला है। ऐसा लगता है जैसे खुद ही चलकर मंज़िल मेरे पास आ गई है।

मेरा आपसे वायदा है, सारा जीवन आपकी ही याद में रहूँगी, आपसे ही प्यार करूँगी, आपके ही गुण गाऊँगी। आप जहां रखेंगे, जिस हाल में रखेंगे, जिस के साथ रखेंगे, जो खिलाएंगे, जब खिलाएंगे, जहाँ बिठाएंगे, मैं आपके कहे अनुसार ही चलूंगी। कभी भी, किसी भी बात में ना नहीं करूँगी। आपका हाथ और आपका साथ कभी नहीं छोडूंगी। मैं अभी भी आपकी हूँ और सदा आपकी ही बनकर के रहूँगी। सदा ही आपकी हमराह बनकर चलूँगी। आपने जिस खुशी और जिंदादिली से जीना सिखाया है, वही मैं दूसरों को भी सिखाऊंगी। आप जैसा जीवनसाथी पाकर मैं बहुत ही खुशनसीब हो गई हूँ। ❖

सुलझ गई हर इक उलझन

रीता छाबड़ा, जबलपुर

भक्ति पथ पर खूब चले
पर जीना फिर भी न आया,
जब ज्ञान का अमृत छलका तो
खुद का इक रूप नया पाया।

इक चाह नई, इक राह नई
इक नया अलौकिक जन्म हुआ,
जन्मों के प्यासे इस मन का
बेजान चमन फिर मुसकाया।

सांसों की हर तार सजी
इस नई रूहानी दौलत से,
सोचा ना कभी जो पहले था
अनमोल खज़ाना वो पाया।

क्या होगा, कैसे होगा
और क्यों का कोई जवाब ना था,
सुलझ गई हर इक उलझन
जब दादी जी ने समझाया।

पाया सुख बेहद का हमने
प्यारे-प्यारे अनुभव पढ़कर,
इस ज्ञान की अमृत धारा ने
दिल का हर कोना महकाया।

ये ज्ञान का सच्चा दर्पण है,
ये सत्य का जीवन दर्शन है,
हर ऊँचे-नीचे रस्तों पर
इसने है चलना सिखलाया।

पत्थर को हीरा बना दिया

❊ शंकर सोनी, डेहरी ऑन सोन (बिहार)

मेरी लौकिक माँ सरकारी विद्यालय में प्रधानाध्यापिका थी और पिताजी इन्जीनियर थे पर अचानक कम्पनी बंद हो जाने के कारण पिता जी का काम छूट गया। उस समय मैं आठवीं कक्षा में था। घर के हालात बिगड़ते गये। मैं पढ़ाई करते भी एक दुकान पर काम करने लगा, इस तरह दसवीं तक पढ़ा। फिर पाँच साल तक बाहर जाकर काम करता रहा। वहाँ से लौटा तो मेरी शादी कर दी गई। कुछ दिन तो ठीक बीते फिर रोज लौकिक माँ और पत्नी की लड़ाई होने लगी। घर में अशान्ति फैलने लगी। दो पुत्रियों का पिता बनने के बाद मुझे घर से अलग कर दिया गया। अब मुझ पर घर चलाने का पूरा बोझ आ गया।

अपने गाँव में ही सोने की दुकान पर 300 रुपये महीने पर काम करने लगा और ईमानदारी के बल पर आगे बढ़ता गया परन्तु अचानक बीमार पड़ गया और डॉक्टर ने एक साल के लिए आराम बता दिया। शरीर से एकदम कमज़ोर हो गया। मंदिर, मस्जिद में दया माँगता रहा, रोता रहा फिर भी कहीं राह नहीं मिली। अनेक गुरुओं के पास गया, फिर भी आँसुओं के सिवा कुछ नहीं मिला, अपने भी पराये हो गये। मुझे सभी रास्ते बंद नज़र आने लगे।

हुआ एक चमत्कार

उसी समय किसी दोस्त के द्वारा गलत संग मिल गया। मैं इतना हिंसक बन गया जो अपने हाथों से चार-पांच हत्याएँ कर दीं। पुलिस ने हथकड़ी लगा कर मुझे विक्रमगंज (बिहार) जेल में भेज दिया। फिर धनबाद जेल में गया। वहाँ दिन-रात रोता रहता था। कोई छुड़ाने वाला नहीं था। धनबाद जेल में ब्रह्माकुमारीज़ गीता पाठशाला चलाई जाती है। एक दिन मैं घूम रहा था तो ब्रह्माकुमारी बहन के प्रवचन की आवाज़ सुनाई पड़ी। मुझे लगा जैसे कोई बुला रहा है। मैं राजयोग कक्ष तक पहुँचा और प्रवचन सुनने लगा। बाद में बहनजी ने मुझे सात दिन का कोर्स कराया तब एक चमत्कार हो गया। बाबा की लाइट दिखाई दी। मुझे लगा, भगवान मेरे लिए आ गए हैं। मुझे लगा कि जेल आना मेरे लिए सार्थक हो गया। जिन्हें मैं मंदिर, मस्जिद आदि जगहों पर ढूंढ़ता था, वे जेल में आने पर मिले। बहन जी से बात की तो उन्होंने कहा, जिस तरह सिनेमा में डाकू का रोल होता है, फिर रोल बदल जाता है,

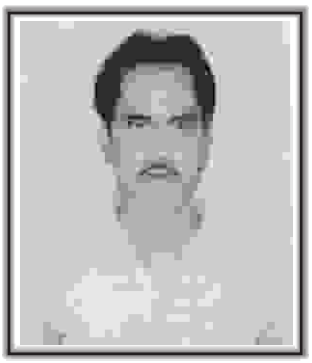

उसी तरह आप अपना रोल अब भगवान के साथ प्ले कीजिए।

अगर मैं जेल से बाहर रहता तो कुसंग से और भी गलत हो जाता या पुलिस की गोली से मारा जाता। मैं तो बहुत ही खुशनसीब हूँ जो बाबा ने अपना मीठा बच्चा बनाकर बहुत ही श्रेष्ठ बना दिया। मेरा जीवन अमूल्य बन गया। अब जहाँ भी जाता हूँ, वहाँ प्यार ही प्यार मिलता है। अब इस खुशी में रहता हूँ कि रास्ते के पत्थर को बाबा ने हीरा बना दिया है। अब मैं जेल से निकलकर बाबा की सेवा कर रहा हूँ। बहनें जहाँ कहती हैं, सेवा में चल देता हूँ और गीता पाठशाला भी चलाता हूँ। बाबा के बताये गये रास्ते पर चलना मेरा कर्म बन गया है। यही मेरा धर्म है, बस एक बाबा दूसरा ना कोई। बाबा शुक्रिया, शुक्रिया बाबा, शुक्रिया। ❖

संपूर्ण समर्पण

* ब्रह्माकुमारी सुजाता, मथुरा

समर्पण का अर्थ है जहाँ स्वयं के सभी अहम्, वहम परमात्मा के प्यार में विलीन हो जाएँ और एक नए मरजीवा जीवन का उद्गम हो। मरजीवा अर्थात् आत्मिक स्थिति वाला और नया अर्थात् पुराने स्वभाव संस्कारों से, पुरानी मान्यताओं से मुक्त। समर्पण से ही आध्यात्मिक जीवन का सम्पूर्ण विकास सम्भव है। सम्पूर्ण समर्पण वो खुला आसमान है जहाँ हम अपनी अन्तिम मंज़िल पर पहुँचने के लिए जितनी चाहें उतनी ऊँची उड़ान भर सकते हैं। प्रभु प्रेम में समर्पित जीवन की खुशी और खुशबू, अनेक प्रभु-परवानों को प्रभु अर्पण कराने के लिए प्रेरणा स्त्रोत बन जाती है। जो प्यार में समर्पित है उस पर बाबा भी प्यार से समर्पित है। समर्पण के लिए महत्त्वपूर्ण विचारणीय तथ्य इस प्रकार हैं –

1.नि:स्वार्थ प्रभु प्रेम – समर्पण का प्रारम्भिक बिन्दु प्रेम है। समर्पण और प्रेम एक-दूसरे के पूरक हैं। एक के बिना दूसरा अधूरा है। नि:स्वार्थ प्रेम ही समर्पण को प्रगाढ़ करता है। साधारणतया प्रभु प्रेम के मार्ग में तीन बाधक तत्व हैं देह, देह के सम्बन्ध और देह के पदार्थ लेकिन परमात्म प्यार इस तीन मंज़िला इमारत को सहज ही पार करा देता है। शिव बाबा ने हम सबको बताया है कि समर्पण अर्थात् सच्चे परवाने की तरह श्वासों-श्वास प्रभु स्मृति में लीन हो जाना। जब प्रभु प्रीत से दिल भरपूर हो जाता है तो त्याग स्वत: और सहजता से होता है। इसलिए किसी ने सच कहा है, इश्क करना ही अगर तुझे मन्जूर है बन्दे, तो कर इश्क उस नूर से जिस नूर का तू नूर है।

2.बेहद का वैराग्य – सम्पूर्ण समर्पण तभी सम्भव है जब जीवन में बेहद का वैराग्य हो। इसके अभाव में समर्पण स्थाई नहीं रह सकता। जब-जब हम इस संसार के रंग-बिरंगे सुखों को देख आकर्षित हुये तब-तब हमें सिवाय दुख और धोखे के कुछ भी नहीं मिला। इच्छाओं और वासनाओं के मार्ग पर चलकर सुख के हीरे-मोती कम लेकिन दुख-अशान्ति के कंकड़-पत्थर ज्यादा मिले। वैराग्य एक आन्तरिक वृत्ति है। यह जीवन में कई बार आता है, केवल समझ द्वारा ही इसे स्थाई बनाया जा सकता है।

3.अहम्, वहम का सम्पूर्ण त्याग – प्रभु समर्पण में मैं और मेरा, ये दो बड़े विघ्न हैं। इसलिए बाबा ने ज्ञान का पहला पाठ ही आत्म-अभिमानी बनने का पढ़ाया है। अहम् ही आत्मा को परम सुख से दूर कर देता है। मैं पन को समाप्त करने के लिए पहले मेरे-पन को मिटाया जाये। जीवन में मेरे का विस्तार जितना ज्यादा होगा अहम् उतना ही बड़ा होगा। घर, परिवार, मान, प्रतिष्ठा, धन, सम्पत्ति और सम्बन्धों के ऊपर ही मैं के महल का निर्माण होता है। इसलिए भक्ति में लोग भगवान के आगे गीत गाते हैं, तन, मन, धन सब तेरा। बाबा ने भी सब मेरे को तेरे में परिवर्तन करने को कहा। इसी अभ्यास से ही हम सर्व बन्धनों से खुद को न्यारा और प्यारा बना पाते हैं।

जब मैं का अभिमान समाप्त होने लगता है तो आत्म स्वरूप का स्वाभिमान स्वत: जाग्रत होता है। किसी शायर ने ठीक कहा है, 'कण-कण में तुझे ढूंढ़ा, तेरा पता नहीं मिलता, और तेरा पता जो मिला तो फिर खुद का पता नहीं मिलता'। तो आइये, ध्यान दें, हीरेतुल्य जीवन का सुप्रभात कहीं व्यर्थ के प्रश्नों में न उलझ जाए। थोड़ा ठहर के सोचें कि प्रभु मिलन की सुखद घड़ियाँ मान, शान, अहंकार या पश्चाताप में न खो जायें। जिसे हमने पुकारा वो हमारे सम्मुख है। बस ज़रूरत है उस पर सच्चे दिल से बलिहार होने की।

समर्पण, कमज़ोरी नहीं बल्कि दृढ़ निश्चय और अनुशासन का प्रतीक है। प्रकृति का नियम है, जहाँ ज़मीन गहरी होती है वहीं वर्षा का जल इकट्ठा होता है, वह ऊँचे पर्वतों पर नहीं ठहरता। समर्पण इसी तरह स्वयं को विनम्र व गहरा बनाकर ईश्वर की कृपा का पात्र बनने की प्रक्रिया है। संगमयुग पर बाबा ने सभी आत्माओं को अपनी कृपा छांव दी है। हम भी सम्पूर्ण समर्पित होकर अपने सभी बोझ उसे दे दें, तो जीवन खुशियों से भरपूर हो जायेगा।

❖

बुराई का त्याग

ब्रह्माकुमार रामकुमार, रेवाड़ी

हम आध्यात्मिक पुरुषार्थियों को चाहिये कि किसी को बुरा ना समझें, किसी की बुराई न करें, किसी की बुराई न सोचें, किसी में बुराई न देखें, किसी की बुराई न सुनें और किसी की बुराई न कहें। इन छः बातों का दृढ़तापूर्वक पालन करके हम बुराई रहित हो जायेंगे। हम विचार करके देखें, इन बातों के कारण ही हम परेशान होते हैं।

कोई हमारी बुराई करे तो बदले में उसका बुरा ना चाहकर यह समझें कि अपने ही दाँतों से अपनी जीभ कट गयी। भलाई करने से भी ज्यादा ज़रूरत है बुराई का त्याग करने की। बुराई का त्याग करने से भलाई अपने आप होगी, करनी नहीं पड़ेगी।

जिस बात को हम बुरा समझते हैं उसका पूरा का पूरा त्याग करने की ज़िम्मेवारी हमारे पर है। अगर हम दूसरे की बुराई करते हैं, उससे उसका बुरा हो या ना हो पर हमारा मन मैला हो जाता है। उसका बुरा होने वाला भी नहीं है पर अपना नया पाप हो जाता है। कई बार हम आत्मायें सोचती हैं कि भला करने से सब हमें भला कहेंगे लेकिन नहीं। भला बनने के लिए कुछ करने की बजाए बुराई सदा के लिए छोड़ दें, भला स्वतः हो जायेगा। बाबा ने हमें पलकों पर बैठा लिया, क्या अब भी हमें किसी और से भला कहलाने की इच्छा रखनी है। सदा याद रखें, मेरा तो एक शिवबाबा, बुरा भी भला हो जायेगा। ❖

अवतरित खुदा

गुरमीत भाई हाटिया, सफिदों (हरियाणा)

अवतरित खुदा कैसा है विस्मय,
तनिक याद से तन-मन हर्षमय,
जहाँ निहारा वहाँ उठता मरघट-सा धुँआधार,
हाटिया कविराय को लगती धरा इक कारागार।।

आया खुदा लेने सब विपदा,
सुखों का अंबार लगेगा सदा,
भूल देहभान खुदा से लगा लो आन,
याद रखो वही रखे तुम्हारा मान।।

आया वह पापों के झोंकों से बचाने,
ज़लज़लों से निकाल स्वर्णद्वार दिखाने,
ऐसे अवसर बार-बार नहीं मिलते हैं,
सतयुगी द्वार बार-बार नहीं खुलते हैं।।

मैं को छोड़ बना लो उसे मीत,
आठों पहर गाओ तुम उसके गीत,
निकलो कांटों से, फूल इंतज़ार कर रहे,
निर्झर खुदाई स्वर आबू में झर रहे।।

छोड़ो पतझड़ बेसब्र, खड़ी बहार,
खुदा की बाँहों में स्वर्ग का हार,
कैसी चिन्ता, कैसी भ्रांति,
पहुँचो आबू, मिलेगी शान्ति।।

वृद्ध अवस्था बेमिसाल

* ब्रह्माकुमार रामसिंह, रेवाड़ी

विश्व की सबसे तयशुदा घटना है मृत्यु। फिर भी मानव जीवन-भर बहुत सारी ताकत उन बातों में लगा देता है जो तय ही नहीं हैं। इंसान चाहे या ना चाहे बुढ़ापा और मृत्यु सदैव धीरे-धीरे कदम बढ़ाते ही रहते हैं। बुढ़ापा आना अर्थात् मृत्यु का निकट आना। वर्तमान समय मानव, देह अहंकार के जीवन-बंधन में है इसलिए बार-बार मृत्यु का ख्याल करके भय में जी रहा है। जब मृत्यु को एक दिन आना ही है तो फिर पहले से ही डरकर जीने से क्या फायदा! उसे आने दो। आत्मा अजर, अमर, अविनाशी और चैतन्य है जिसे न बुढ़ापा जर्जर कर सकता है और न ही आग जला सकती है। इसलिए बुढ़ापे को आता देख व्यर्थ में भयभीत क्यों हुआ जाये?

वृद्धावस्था है जीवन चक्र का हिस्सा

वृद्धावस्था तो सभी की ज़िन्दगी में आनी ही है क्योंकि यह भी जीवन-चक्र का हिस्सा है। वृद्धावस्था जीवन के अनुभवों से ओत-प्रोत है, संतुष्ट है, आज़ाद है, उसके पास समय ही समय है, बहुत-सी ज़िम्मेदारियों से फारिग है, बहुत सारी इच्छाओं व शौक से बंधनमुक्त। यह उम्र वो सब कुछ कर सकती जो युवावस्था में नहीं हो सका।

बुढ़ापा एक अनुभव है

बुजुर्ग लाइब्रेरी की तरह होते हैं। उनके एक-एक शब्द में ज़िन्दगी भर के अनुभवों का निचोड़ होता है जिसके आधार पर वे चुनौतियों, विघ्नों, बाधाओं को हिम्मत और हौसले के साथ स्वीकार कर लेते हैं। ऐसा कर लेने में बुजुर्ग जीवन का असली आनन्द लेते हैं। साथ ही मानसिक तनाव से बचे रहते हैं। बुजुर्ग के चेहरे की एक-एक झुर्री पर हज़ार-हज़ार अनुभव लिखे होते हैं जिसके आधार पर प्रतिकूल परिस्थितियाँ सहज ही पार हो जाती हैं। लेकिन थोड़े से संघर्ष से यदि व्यक्ति हार मान ले, टूट जाये तो वह अपनी मंज़िल को ही भूल जाता है और यदि मंज़िल हासिल करनी है तो संघर्ष करना ही पड़ेगा तभी उस जीत की मिठास महसूस होगी। कहते हैं, वह मनुष्य धैर्यवान और प्रशंसा के योग्य है जो विपत्ति में भी अपना स्वमान नहीं छोड़ता।

युवा और बुजुर्गों का तालमेल

हर व्यक्ति का सेवाकाल तो निर्धारित होता है लेकिन कार्यकाल की कोई सीमा नहीं होती। सेवानिवृत्ति के बाद बुजुर्ग अपने अनुभव, दिशाहीन युवा पीढ़ी में बाँटें तो बहुतों को जीवनदान मिलेगा। वर्तमान समय युवा पीढ़ी ने बहुत सारे सराहनीय कार्य किए हैं और अनेक उपलब्धियाँ भी हासिल की हैं। आज युवाओं के लिए वे सब साधन उपलब्ध हैं, जो पहले नहीं थे। लेकिन बुजुर्गों ने अपने जीवन को बिना साधनों के ही यहाँ तक बढ़ाया है। फिर भी बुजुर्गों के प्रति आदर भाव कम होता जा रहा है, इसके लिए सिर्फ युवाओं को ही दोषी नहीं ठहराया जा सकता। बुजुर्गों को भी युवाओं की भावनाओं और

महत्त्वाकांक्षाओं को समझने का प्रयास करना चाहिए। आज युवा पीढ़ी में जितना जोश है, उतना ही मार्गदर्शन के अभाव में वह भटकाव के रास्ते पर है। सत्यता तो यह है कि युवा पीढ़ी अपने बुजुर्गों से सीखकर ही जीवन के लक्ष्य को तय करती है।

खुशी जैसी खुराक नहीं

जीवन को जीने का मूलमंत्र है, जीवन के हर क्षण को खुशी से जीना। तभी तो कहा जाता है, खुशी जैसी खुराक नहीं। जीवन को सुखमय बनाना उन्हें आता है जो सुख की तरह दुख का भी खुशी से आह्वान करते हैं अर्थात् दुख में भी सुख ढूँढ़ लेते हैं। इस जीवन पथ पर कहीं पहुँचना नहीं है बल्कि एक लक्ष्य बनाना है कि मुझे दिव्यगुण धारण कर दैवी राज्य में अधिकार पाना है। इसलिए समस्यास्वरूप बनने के बजाय हर कदम पर समाधान स्वरूप बनना है। हर क्षण को उत्सव के रूप में मनाना है। मानव सेवा और विश्व सेवा अर्थ कार्य में लग जाने से बहुतों का कल्याण तो होगा ही, साथ-साथ स्वयं को भी संतुष्टता मिलेगी व मन को शान्ति मिलेगी। दूसरों के प्रति शुभभावना, शुभकामना व दया भाव, सहयोग की भावना रखने से जीवन में अद्भुत निखार आ जाता है। किसी से टकराने के बजाय उस आत्मा पर रहम भाव रहे, कल्याण की भावना रहे तो परमात्म शक्ति व परमात्म स्नेह अपने आप मिलेगा और जीवन सुखमय बन जायेगा।

विश्व परिवर्तनशील है

बुढ़ापा सिर्फ शरीर का परिवर्तन है। यह विश्व भी परिवर्तनशील है। अन्य वस्तुओं में भी परिवर्तन आता है फिर इस बदलाव से डर कैसा? जब बचपन छूटा तो मायूस नहीं हुए बल्कि जवानी अच्छी लगी। फिर जवानी चली गई, बुढ़ापा आया। इसे देख मायूस क्यों हों? अब यह बुढ़ापा भी जाने को है तो फिकर किस बात की! कुछ खोना है तो आगे कुछ पाना भी है। देह आत्मा संग नहीं जा सकती तो विनाशी कमाई भी नहीं जा सकती। लेकिन राजयोग के अभ्यास द्वारा की गई अविनाशी कमाई 21 जन्मों तक सुख देगी।

हम सभी यहाँ मेहमान हैं

आत्मा इस देह और संसार में मेहमान की तरह है। ना यह शरीर स्थायी है और ना ही यह दुनिया। एक ना एक दिन वापस जाना निश्चित है। मेहमान काम पूरा होने पर अपने घर लौट आता है इसी प्रकार इस देह और देह की दुनिया से हमें भी वापस अपने घर आत्माओं की दुनिया अर्थात् परमधाम अवश्य लौटना है। देह के आधार पर जिनको हम अपनी स्त्री, पुत्र-पौत्र मानते हैं, उनकी इच्छायें पूर्ण करने के लिए अधिक से अधिक कष्ट से कमाई करते हैं, क्या वे सबके सब साथ जायेंगे? नहीं ना। इसलिए अब अपने मन का स्नेह एक परमपिता शिव परमात्मा से जोड़ना है और इस भावी विनाश से पहले संसार से अपने मन को मोड़ना है। कहावत है –

जो खाया वह पेट में लगेगा,
जो दान किया, वह साथ चलेगा,
बाकी सबको जंक लगेगा।

जब बाबा ने ..पृष्ठ 21 का शेष

अब हमें समझ में आया कि शिवबाबा बार-बार यह संकल्प क्यों टच कर रहे थे। मैं अव्यक्त वाणी पढ़ रही थी और बाबा सकाश दे रहे थे। बाबा तो जानीजाननहार हैं। उन्हें मालूम था, आगे क्या होने वाला है इसलिये अपनी बच्ची के साथ अन्य सभी आत्माओं को बचाने के लिए बाबा ने ट्रेन के ड्राइवर की बुद्धि को टच किया कि गाड़ी रोक दो और सभी सुरक्षित रहे। अब तो मेरी आँखों से प्यार के झरने बहने लगे। रोमांच खड़े हो गए। लगने लगा कि पंख लग गये हैं। मन कहने लगा कि अभी उड़कर परमधाम जाकर अपने मोस्ट बिलवेड बाप को कितना प्यार करूँ, उनकी बाँहों में जाकर उनको छोड़ूँ ही नहीं। कितना मीठा बाबा, कितना प्यारा बाबा। कितना प्यार करते हैं बाबा हमें। कितना संभालते हैं हमें। वो हमारे दिल में रहते हैं, उससे भी ज्यादा हम उनके दिल में रहते हैं। ❖

कैंसर की गांठ पिघल गई

❊ रामशंकर सिंह, भांडुप (वेस्ट)

यह घटना सितम्बर, 2011 की है तब मैं ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़ा नहीं था। मेरी उम्र 67 वर्ष है। मुझे कुछ दिनों से पेशाब में जलन और दर्द होने लगा। मैं इसका इलाज करवाने हेतु मुंबई में बड़े भाई शिवसहाय के पास चला आया। हमारे बड़े भाई और उनकी युगल दोनों 15 वर्षों से इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय के नियमित विद्यार्थी हैं और उनका सुपुत्र अजय पेशे से डॉक्टर है तथा वह भी 3 वर्षों से संस्था से जुड़ा है।

घर पर इलाज शुरू

डॉ.अजय ने मेरी जाँच करवाई तो पता चला कि पेशाब की थैली में 7.5 (साढ़े सात) सेंटीमीटर की कैंसर की गाँठ है। विशेषज्ञ ने कहा, आपरेशन करवाना अति आवश्यक है, नहीं तो ये एक महीने से अधिक नहीं जी सकेंगे। मेरा वजन 67 किलो से घटकर 45 किलो ही रह गया था। डॉ. अजय ने अपने एक विशेषज्ञ मित्र से सलाह ली तो उन्होंने कहा कि कमजोर शरीर आपरेशन बर्दाश्त नहीं कर सकेगा। बेहतर है कि आप इन्हें घर पर ही रखें और सेवा करें। अब घर पर ही मेरा इलाज शुरू हो गया। पेशाब की थैली लग गई। दर्द के कारण कराह से घर में किसी को नींद ठीक से नहीं आती थी। असहनीय दर्द से मैं जीवन से मुक्ति की कामना करने लगा।

अमृतवेले विशेष अनुभव

मेरे बड़े भाई रोज़ सवेरे 3.30 बजे उठकर मेरे लिये ईश्वर से योग लगाते थे। मेरे कारण से उनका सेवाकेन्द्र पर जाना भी नहीं हो पाता था। भाई जी को सवेरे अमृतवेले विशेष अनुभव होने लगे जिनके आधार पर सर्वप्रथम उन्होंने घर पर पीस आफ माइंड चैनल शुरू करवाया। मैं दिन-रात बिस्तर पर पड़े-पड़े वह चैनल देखता। ज्ञान की अद्भुत बातें व कार्यक्रम देखकर बहुत अच्छा लगता था। जब दर्द निवारक दवा से मेरा दर्द कम हो जाता तो भाई साहब राजयोग का अनुभव कराने लगते, इस प्रकार मेरा कोर्स भी संपन्न हुआ। फिर एक दिन शिवसहाय भाई ने डॉ. अजय से कहा, आज बाबा सुबह अनुभव करा रहे थे कि यदि दवाओं से कोई फर्क नहीं पड़ रहा है तो इन्हें बंद करके देखो। पहले तो डॉ. अजय नहीं माने फिर प्रयोग के तौर पर मान लिया। दूसरे दिन से ही दर्द कम हो गया। तीसरे दिन दर्द नाम मात्र का ही रह गया। इसके बाद पेशाब की नली भी निकाल दी, पहले थोड़ी परेशानी हुई, फिर धीरे-धीरे सहज होता गया।

ईश्वरीय चमत्कार

घर पर ही पौष्टिक आहार, बाबा की याद से मेरा स्वास्थ्य अच्छा होने लगा। दो महीने के बाद मैं चलने-फिरने लगा। पुन: सोनोग्राफी कराई तो 7.5 सेंटीमीटर की गाँठ घटकर 2.5 सेंटीमीटर की ही रह गई। जब विशेषज्ञ को रिपोर्ट दिखाई तो वह आश्चर्यचकित होकर कहने लगा कि यह कोई ईश्वरीय चमत्कार ही हो सकता है। एक साल बाद फिर से रिपोर्ट कराई तो कैंसर की गाँठ केवल एक सेंटीमीटर ही रही थी। सचमुच बाबा ने नया जीवन दिया। धन्य हैं ब्रह्माकुमार, ब्रह्माकुमारियाँ जो ऐसे सेवा व ईश्वरीय याद से सबका भला करते हैं। वाह बाबा वाह, शुक्रिया बाबा शुक्रिया। ❖

ब्र.कु. आत्मप्रकाश, सम्पादक, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबू रोड द्वारा सम्पादन तथा ओमशान्ति प्रिन्टिंग प्रेस, शान्तिवन -307510, आबू रोड में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए छपवाया। संयुक्त सम्पादिका - ब्र.कु. उर्मिला, शान्तिवन
E-mail : omshantipress@bkivv.org Ph. No. : (02974) - 228125 gyanamritpatrika@bkivv.org

1.दिल्ली (पहाड़गंज)- रामकृष्ण मिशन के सचिव स्वामी आत्मानंद जी को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.ज्योति बहन। **2.अहमदनगर-** भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष भ्राता अमित शाह को 100 प्रकार के फूलों के गुलदस्ते द्वारा ईश्वरीय सन्देश देते हुए ब्र.कु.दीपक भाई। **3.पूना-** केन्द्रीय सूचना तथा प्रसारण मंत्री भ्राता प्रकाश जावदेकर को ईश्वरीय सौगात तथा साहित्य देते हुए ब्र.कु.यशवंत भाई, ब्र.कु.सुलभा बहन। **4.पाटन-** गुजरात की मुख्यमंत्री आनंदी बहन पटेल को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.नीलम बहन। **5.भुवनेश्वर-** ब्र.कु.लीना बहन को नगरबंधु अवार्ड से सम्मानित करते हुए उड़ीसा के मुख्यमंत्री भ्राता नवीन पटनायक। **6.पणजी-** गोवा के मुख्यमंत्री भ्राता मनोहर पर्रीकर को ईश्वरीय संदेश देते हुए ब्र.कु.शोभा बहन तथा ब्र.कु.सुरेखा बहन। **7.मुंबई (मुलुण्ड)-** 'बैलेन्स शीट ऑफ लाइफ' विषयक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु.शिवानी बहन, भ्राता सुरेश ओबेराय, ब्र.कु.गोदावरी बहन तथा ब्र.कु.हरिलाल भाई। **8.सिरोही-** मूल्यनिष्ठ पत्रकारिता के लिए जिला पत्रकार संघ अध्यक्ष ब्र.कु.अवतार भाई को जिलाधीश भ्राता वी.श्रवण कुमार, जिला परिषद अध्यक्ष भ्राता चंदन सिंह प्रशस्ति पत्र देते हुए। **9.कुचबिहार (प.बंगाल)-** वनमंत्री भ्राता बिनॉय बर्मन को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.सम्पा बहन। **10.नोएडा (भंगेल)-** केन्द्रीय सामाजिक न्याय और अधिकारिता राज्यमंत्री भ्राता सुदर्शन भगत को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.लक्ष्मी बहन तथा ब्र.कु.अनिल भाई।

RNI No.10563/1965, Postal Regd. No.RJ/SRO/9559/2012-2014 Posting at Shantivan-307510 (Abu Road) Licensed to post without prepayment No. RJ/WR/WPP/002/2013-2014. Published on 25th of each Month & Posted on 1st to 6th of each month. Price 1 copy Rs. 8.50, Issue : October, 2014.

शान्तिवन (आबू रोड)-
कला एवं संस्कृति प्रभाग के रजत जयंती महोत्सव का उद्घाटन करते हुए फिल्म अभिनेत्री बहन वर्षा उसगांवकर, राजयोगिनी दादी रत्नमोहिनी, ब्र.कु.रमेश भाई, ब्र.कु.मुन्नी बहन तथा अन्य।

ज्ञान सरोवर (आबू पर्वत)-
राजनीतिज्ञ प्रभाग द्वारा आयोजित सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए नेपाल के सांसद भाता इंद्र बहादुर, विधायक भाता अमर प्रसाद सत्पथी, सांसद भाता थोकचंद मेनिया, ब्र.कु.बृजमोहन भाई, ब्र.कु.शारदा बहन, ब्र.कु.आशा बहन तथा अन्य।

रायपुर-
छत्तीसगढ़ के राज्यपाल महामहिम भाता बी.डी.टण्डन का तिलक लगाकर स्वागत करते हुए ब्र.कु.कमला बहन। साथ में ब्र.कु.सविता बहन।

सेंटपीटर्सबर्ग-
रजत जंयती महोत्सव का उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी जी, ब्र.कु.संतोष बहन, ब्र.कु.चक्रधारी बहन तथा अन्य गणमान्यजन।